Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

नई दिल्ली • वर्ष 27 • अंक 23 • 09 मार्च - 15 मार्च 2026 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 07-03-2026 • पेज 12 • ₹ 10 रुपये

त्यां जीवादिक नव पदार्थ तणों,
निरणों कीयों भांत भांत।
त्यांनें हलूकर्मी जीव ओलखे,
पूरी मन री खांत।।

इन पुरुषों ने भिन्न-भिन्न प्रकार से जीव आदि नव पदार्थों का स्वरुप-निरुपण किया है। हलुकर्मी जीव उनकी पूरे मनोयोग पूर्वक ओलख (पहचान) करते हैं।

– आचार्यश्री भिक्षु

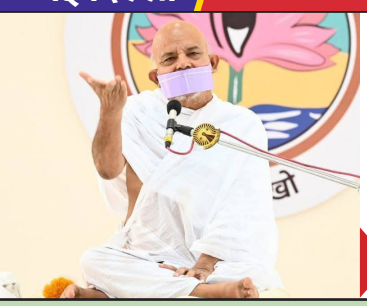

सहन करो सफल बनो : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 02

मनोरंजन से आत्मरंजन की ओर बढ़ाने वाला ज्ञान अपनाएँ : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 10

Address Here

प्रकृति को महत्ता दें, आकृति को नहीं : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं।
03 मार्च, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी की पावन सन्निधि में कार्यक्रम का शुभारंभ आचार्य प्रवर के मंगल महामंत्रोच्चार के साथ हुआ। साध्वी वृंद ने प्रज्ञागीत का संगान किया। युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि व्यक्ति समाज में सामूहिक जीवन जीता है वहां संगति का भी एक विषय बन जाता है कि व्यक्ति किसकी संगति में ज्यादा रहता है। दुनिया में मित्र बनाए जाते हैं और फिर उनसे संपर्क का क्रम भी रहता है। शास्त्राकार ने एक दिशा निर्देश देते हुए सावधान किया है कि संगति, संसर्ग क्षुद्रों की मत करो। जिनकी प्रकृति क्षुद्र है, आदतें अच्छी नहीं है, जीवन में उच्चता नहीं है, संस्कार अच्छे नहीं है, भाषा का प्रयोग भी जिनका अच्छा नहीं है, धर्म, अहिंसा, अध्यात्म, आदि का जीवन में प्रभाव नहीं है, उनकी संगति करना अच्छा नहीं होता। एक व्यक्ति प्रकृति से अच्छा हो सकता है, तो दूसरा व्यक्ति प्रकृति से नीचा हो सकता है।

आकृति और प्रकृति इन दोनों का महत्त्वांकन करें तो आकृति के आधार पर, कोई विश्लेषण किया जा सकता है। किसी व्यक्ति का चेहरा अच्छा है परन्तु यदि उसकी प्रकृति क्षुद्र है तो उसकी आकृति का कोई महत्त्व नहीं है।

व्यक्ति प्रकृति से ही बड़ा और प्रकृति से ही छोटा होता है, आकृति से कोई व्यक्ति नीच नहीं बन जाता और न ही आकृति से कोई महान बनता है। जिस व्यक्ति में नम्रता है, अहंकार नहीं है, क्षमा करने वाला है और आराध्य के प्रति भक्तिभाव रखता है व सबके प्रति आदर भाव है वह बड़े स्वभाव वाला व्यक्ति ही बड़ा होता है। अतः व्यक्ति को अपनी प्रकृति पर ध्यान देना चाहिए।

व्यक्ति यदि किसी अच्छे ज्ञान वाले की संगति करे तो अच्छा ज्ञान मिल सकता है। संगति तीन प्रकार की होती है - मनुष्यों की संगति, साहित्य की संगति और मीडिया की संगति। व्यक्ति को अच्छे मनुष्यों की संगति में रहना चाहिए। ज्ञानी, संस्कारी और अनुभवी व्यक्तियों के पास रहें तो कुछ अच्छा मिलने की संभावना बन सकती है। दूसरे प्रकार की संगति है - साहित्य संगति। अच्छी किताबें पढ़ने से भीतर की चेतना में अच्छे संस्कार आ सकते हैं। हिंसात्मक और खराब साहित्य पढ़ने से हमारे संस्कारों पर भी दुष्प्रभाव पड़ सकता है।

तीसरा प्रकार है - मीडिया संगति। टी.वी., मोबाइल, इत्यादि में कोई खराब चीजें देखें तो संस्कार भी दूषित हो सकते हैं। इसके विपरित यदि कोई संतों के प्रवचन, ज्ञान की वाणी आदि सुनते हैं तो अच्छी जानकारी व संस्कार मिल सकते हैं। (शेष पेज 9 पर)

मनोरंजन को छोड़ आत्मरंजन करने का प्रयास करें : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं।
02 मार्च, 2026

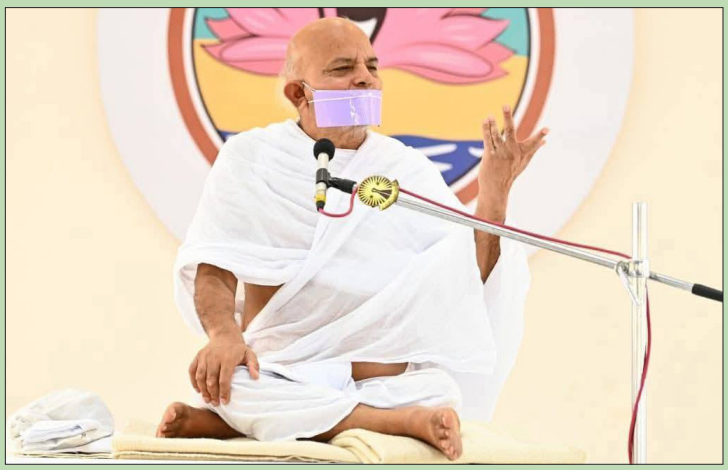

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने होली पर्व के संदर्भ में 'मनोरंजन पर आत्मरंजन' विषय पर अपनी पावन देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि व्यक्ति मनोरंजन में भी रूचि लेता है इसलिए हास्य, विनोद, विभिन्न दृश्यों को देखना, विभिन्न शब्दों का प्रयोग करना आदि दुनिया में होते हैं। पांचों विषयों को सेवन करना व्यक्ति के भीतर की सुखाकांक्षा का भी द्योतक हो सकता है।

व्यक्ति सुख चाहता है। सुख दो प्रकार का हो सकता है एक वैषयिक सुख और एक आध्यात्मिक सुख। दोनों ही सुख हैं परन्तु दोनों ही सुखों में प्रकृतिगत, स्वरूपगत अंतर होता है। वैषयिक सुख, सुख तो एक दृष्टि से हो सकता है परन्तु यदि वह आसक्ति के साथ भोगा जा रहा है तो वह दुःखों को भी साथ लेकर आ रहा होता है। व्यक्ति जन्म लेता है, जीवन जीता है और एक दिन अवसान को प्राप्त हो जाता है। जिस प्रकार व्यक्ति जन्म के साथ मृत्यु को भी साथ लेकर आता है उसी प्रकार वैषयिक सुख यदि आसक्ति के साथ भुक्त हो रहे हैं तो वे दुःख को साथ लेकर आते हैं। परन्तु जैसे-जैसे व्यक्ति साधना के पथ पर बढ़ता है, उत्तम तत्त्व को प्राप्त होता जाता है वैसे वैसे वैषयिक सुख रूचिकर नहीं लगते और जैसे-जैसे विरक्ति बढ़ती है वैसे-वैसे व्यक्ति उत्तम तत्त्व को प्राप्त कर सकता है। जब आत्मा से लगाव, त्याग की ओर आकर्षण और संयम का रसास्वादन होता है, व्यक्ति विषय भोगों से विरक्ति का अनुभव कर सकता है।

मनोरंजन पर आत्मरंजन का अंकुश होना चाहिए। संसार में लोग मनोरंजन, विभिन्न माध्यमों जैसे खाना-पीना, आमोद प्रमोद आदि से करते हैं, पर इससे भी ऊपर है आत्मा में रमण करना। जब व्यक्ति को यह अनुभूति हो जाती है कि ये बाह्य सुख किंपाक फल के समान है तो वह आत्मरंजन की ओर बढ़ सकता है और आत्मरमण और विषय विरक्ति से मिलने वाला सुख बहुत अच्छा और पवित्र होता है। (शेष पेज 9 पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
09 मार्च - 15 मार्च 2026

सहन करो, सफल बनो : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं।
28 फरवरी, 2026

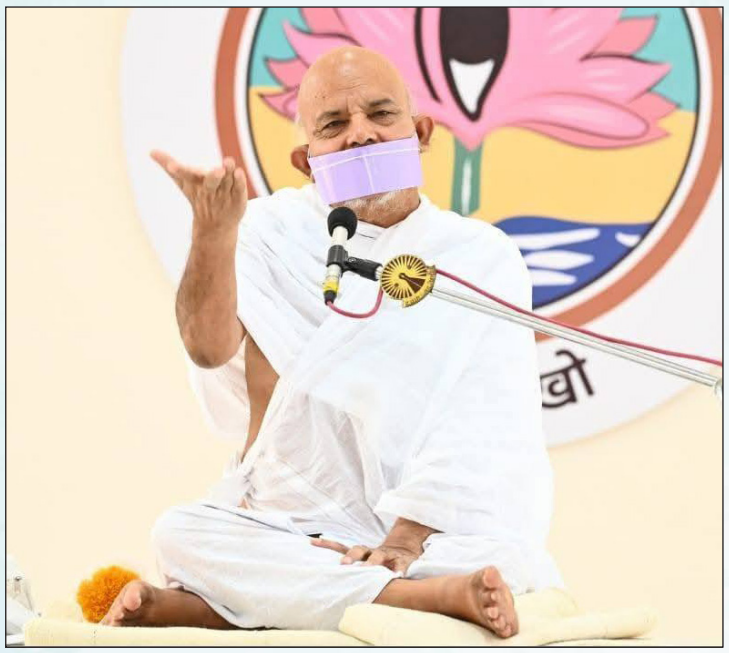

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के अधिशास्ता, आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा दिए गए प्रवचन का मुख्य केंद्र 'सहन करो, सफल बनो' का सिद्धांत रहा। आचार्यश्री ने रेखांकित किया कि मानवीय सामुदायिक जीवन की शांति और विकास के लिए शासन प्रणाली और अनुशासन अनिवार्य हैं। दस्तावेज़ में शासन के विभिन्न अंगों (विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका) की भूमिका, धार्मिक संगठनों में मर्यादाओं का महत्व और व्यक्तिगत सफलता के लिए अनुशासन को स्वीकार करने की आवश्यकता पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है।

1. सामुदायिक जीवन में शासन प्रणाली की अनिवार्यता

आचार्यश्री महाश्रमणजी ने फरमाया कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और जहां भी सामुदायिक जीवन होता है, वहां एक सुव्यवस्थित शासन प्रणाली की आवश्यकता स्वतः उत्पन्न हो जाती है।

व्यवस्था और नेतृत्व : विश्व के प्रत्येक स्तर (देश, राष्ट्र, प्रांत या नगर) पर शासन प्रणाली का होना आवश्यक है। चाहे वह राजतंत्र हो (जहाँ राजा प्रधान होता है) या लोकतंत्र (जहाँ प्रधानमंत्री और मंत्री होते हैं), एक मुखिया का होना अनिवार्य है।

मौलिक आवश्यकताओं की सुरक्षा : शासन प्रणाली का प्राथमिक उद्देश्य व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकताओं जैसे भोजन और आवास की सुरक्षा करना है। यदि कोई व्यवस्था न हो, तो अराजकता फैल सकती है जहाँ शक्तिशाली लोग दूसरों के संसाधन छीन सकते हैं।

शांति और न्याय: अपराधों को रोकने, अपराधियों को दंडित करने और समाज के निर्धन एवं जरूरतमंद वर्गों की सहायता सुनिश्चित करने के लिए शासन तंत्र आवश्यक है।

2. शासन के प्रमुख अंग और उनके उत्तरदायित्व

एक सुचारू शासन तंत्र के तीन प्रमुख स्तंभों का वर्णन किया गया है, जो समाज के विकास और सुख-शांति के लिए उत्तरदायी हैं:

अंग भूमिका और उत्तरदायित्व

विधायिका : नियम, कायदे और कानूनों का निर्माण करना।

कार्यपालिका : शासन-प्रशासन की देखरेख करना और यह सुनिश्चित करना कि कार्य नियमों के अनुसार हों।

न्यायपालिका : अपराधियों को दंडित करना ताकि उनमें सुधार आए और समाज के अन्य लोग अपराध करने से बचें।

मुख्य निष्कर्ष : विधान (संविधान) श्रेष्ठ होना चाहिए और समय की आवश्यकतानुसार उसमें संशोधन या परिवर्तन की गुंजाइश होनी चाहिए। यदि विधान और उसका पालन दोनों उत्कृष्ट हों, तो संगठन या राष्ट्र का विकास सुनिश्चित है।

3. धार्मिक संगठनों में अनुशासन और विधान

आचार्यश्री ने स्पष्ट किया कि शासन और अनुशासन केवल राजनीतिक क्षेत्रों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि धार्मिक संगठनों के सफल संचालन के लिए भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं।

तेरापंथ धर्मसंघ की विरासत: जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के प्रथम अनुशास्ता, आचार्य श्री भिक्षु ने संघ की मर्यादाओं के लिए ठोस नियम और व्यवस्थाएं बनाई थीं।

प्रमुख नियमावली : धर्मसंघ के सुचारू संचालन के लिए निम्नलिखित विधान उपलब्ध हैं:

अनुशासन संहिता और मर्यादावली: साधु-साध्वियों के लिए निर्धारित नियम।

श्रावक संदेशिका : गृहस्थ अनुयायियों (श्रावकों) के लिए मार्गदर्शक निर्देश।

निरंतर अध्ययन का महत्व: नियमों की जानकारी के अभाव में होने वाली गलतियों से बचने के लिए साधु-साध्वियों और श्रावकों को समय-समय पर इन नियमावलियों का अध्ययन करते रहना चाहिए।

4. 'सहन करो, सफल बनो': अनुशासन का व्यावहारिक दर्शन

प्रवचन का सबसे महत्वपूर्ण विषय 'कैसे सहें अनुशासन' था। आचार्यश्री ने इस बात पर जोर दिया कि अनुशासन को केवल मानना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसे धैर्यपूर्वक सहन करना ही सफलता की कुंजी है।

सफलता का सूत्र : 'सहन करो-सफल बनो' का मंत्र यह दर्शाता है कि अनुशासन के पालन में आने वाली कठिनाइयों को सहन करने से ही व्यक्ति और संगठन दोनों की प्रगति होती है।

अनुशासन की स्वीकार्यता : शासन की समस्त व्यवस्थाएं सुचारू रूप से चलती रहें, इसके लिए प्रत्येक सदस्य को अनुशासन के प्रति समर्पित रहना चाहिए।

संवाद और जिज्ञासा : अनुशासन केवल आदेशों का पालन नहीं है; इसमें जिज्ञासाओं का समाधान भी शामिल है, जैसा कि आचार्यश्री ने प्रवचन के बाद साधु-साध्वियों की जिज्ञासाओं को शांत कर प्रदर्शित किया।

5. उपासक सेमिनार और संगठनात्मक गतिविधियाँ

उपासक श्रेणी : जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के अंतर्गत आयोजित इस सेमिनार में राष्ट्रीय संयोजक सूर्यप्रकाश श्यामसुखा और जयंतीलाल सुराणा ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

सामूहिक प्रस्तुति : उपासक श्रेणी के सदस्यों द्वारा समूह गीत की प्रस्तुति दी गई, जिसे आचार्यश्री ने अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

साध्य के स्वरूप के अनुरूप ही हो साधन : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं।
01 मार्च, 2026

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी जी की पावन सन्निधि में योगक्षेम वर्ष के संदर्भ में मुख्य मंगल प्रवचन का शुभारंभ आचार्यश्री महाश्रमणजी के मंगल महामंत्रोच्चार के साथ हुआ।

साध्वी वृंद ने प्रज्ञा गीत का संगान किया। तदुपरान्त परम पूज्य आचार्य प्रवर ने निर्धारित विषय 'साध्य-साधन शुद्धि' पर अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि साध्य, साधन, शुद्धि ये तीन शब्द है। एक साध्य होता है और साध्य से किसी दृष्टि से जुड़ा हुआ साधन होता है। साध्य और साधन दोनों में समानता का दर्शन किया जा सकता है। जैसा साध्य होता है उसके अनुकल ही यदि साधन होता है तो साध्य की प्राप्ति हो सकती है।

धार्मिक जगत में आत्मवाद का सिद्धान्त है। जो आत्मा के अस्तित्व को मानता है, पूर्वजन्म-पुनर्जन्म के सिद्धान्त को मानता है, पुण्य-पाप के फल को मानता है, वह आस्तिक है। जैन दर्शन आत्मा में विश्वास करता है कि आत्मा है और आत्मा शाश्वत है, पूर्वजन्म-पुनर्जन्म व पुण्य-पाप के फल और कर्मवाद को भी जैन दर्शन स्वीकार करता है। आत्मा जन्म-मरण करती है तो उसके मोक्ष की बात भी होती है।

साधुपन स्वीकार करने का अंतिम लक्ष्य अर्थात् साध्य मोक्ष है। प्रश्न है कि मोक्ष प्राप्ति का साधन क्या है? मोक्ष परम पवित्र तत्त्व है तो उसका साधन भी पवित्रता ही बन सकता है और वह पवित्र साधन है - धर्म। मोक्ष में वीतरागता होती है तो मोक्ष का साधन भी वीतरागता ही

बनेगा। मोक्ष में अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन है तो उसका साधन भी सम्यक् ज्ञान और सम्यक् दर्शन ही बनेंगे। मोक्ष राग-द्वेष रहित है, उसमें संयम है तो मोक्ष का साधन भी संयम बनेगा। हमारे साध्य के स्वरूप के अनुरूप ही हमारा साधन होना चाहिए। साधना काल के साधन ज्ञान, दर्शन चारित्र सिद्धि प्राप्त होने के बाद साध्य में विलीन हो जाते हैं।

आचार्य प्रवर ने कहा कि आज फाल्गुन शुक्ला त्रयोदशी है। तिथि के अनुसार आज आचार्यश्री भिक्षु का मासिक जन्म दिवस भी है और मासिक महाप्रयाण दिवस भी है। अभी आचार्य श्री भिक्षु जन्म त्रिशताब्दी वर्ष चल रहा है, जिसे भिक्षु चेतना वर्ष नाम दिया गया है। मंगल प्रवचन के उपरांत आचार्य प्रवर ने चारित्रात्माओं को अपनी जिज्ञासाएं प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान कर उन्हें समाहित किया।

आज से चारित्रात्माओं के लिए प्रारंभ हो रहे प्रेक्षाध्यान शिविर के शुभारंभ के संदर्भ में संभागी चारित्रात्माओं को आचार्यश्री ने प्रेक्षाध्यान की उपसंपदा प्रदान की। मुनि श्रेयांश कुमारजी ने गीत का संगान किया।

अणुव्रत स्थापना दिवस के संदर्भ में अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रताप सिंह दूगड़ व अणुव्रत समिति लाडनूं के अध्यक्ष शांतिलाल बैद ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। पायल बैद ने गीत का संगान किया। मंत्री राज कोचर ने भी अभिव्यक्ति दी। आचार्य प्रवर ने मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

तेरापंथ की युवा शक्ति का दिव्य संकल्प : अभ्यर्थना 2.0

श्रीमुख से श्रीमुख तक : 54 दिनों के अखंड जप की ऐतिहासिक सिद्धि

लाडनूं।

सर्वांगीण विकास का लक्ष्य रखने वाली संस्था अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत के नेतृत्व में संपूर्ण भारत एवं नेपाल की 300 से अधिक परिषदों में दिनांक 15 दिसंबर 2025 से 6 फरवरी 2026 तक 54 दिनों तक लगातार अभ्यर्थना 2.0 के माध्यम से अखंड जप का आयोजन किया गया। जिसमें 6700 से ज्यादा घंटे जप के क्रम से तेरापंथी युवा एवं किशोरों ने जप किया, संपूर्ण श्रावक समाज भी सहयोगी बना।

अत्यंत गौरव की बात है कि इस अखंड जप का शुभारंभ भी परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी के श्रीमुख से हुआ और इसका समापन भी आचार्य प्रवर के श्रीमुख से हुआ।

यह केवल एक संयोग नहीं, अपितु गुरुकृपा की वह पावन अनुकंपा है जिसने इस संकल्प को सिद्धि तक पहुँचाया। हमारे आराध्य परम पूज्य गुरुदेव का वाक्य — 'सपने पूरे नहीं होते, संकल्प पूरे होते हैं' अब केवल एक पंक्ति नहीं रहा, अपितु अभातेयुप के लिए एक जीवंत सारांश बन गया है।

राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत ने कहा कि तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक महामना आचार्य श्री भिक्षु के जन्म त्रिशताब्दी वर्ष एवं तेरापंथ के विकास पुरुष गणाधिपति आचार्य श्री तुलसी के दीक्षा शताब्दी के पावन अवसर पर यह जप की अभ्यर्थना युवाओं एवं किशोरों द्वारा की गई। जप का शुभारंभ 15 दिसंबर को तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें आचार्य श्री महाश्रमण जी ने स्वयं के मुखारविंद से आचार्य भिक्षु की जन्मस्थली कंटालिया राजस्थान में किया एवं दिनांक 6 फरवरी को तेरापंथ धर्मसंघ के नवमें आचार्य गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी के जन्म स्थान लाडनूं राजस्थान में सम्पन्न किया।

संस्था के राष्ट्रीय महामंत्री सौरभ पटावरी ने जानकारी दी कि अभातेयुप द्वारा पहली बार 54 दिनों तक अखंड जप का आयोजन किया गया जिसमें बड़ी संख्या में देश और नेपाल के युवा एवं किशोरों ने तन्मयता से जप किया। जप 'ॐ भिक्षु ॐ भिक्षु ॐ भिक्षु, जय तुलसी जय तुलसी जय तुलसी जय' के मंत्र के साथ सामायिक में एकाग्रचित्त होकर किया गया। आयोजन प्रभारी देव चावत ने बताया कि इस आध्यात्मिक साधना को सुव्यवस्थित बनाने हेतु परिषदों को चार ज़ोन में विभाजित किया गया—

नॉर्थ ज़ोन : 15 दिसंबर – 27 दिसंबर 2025
वेस्ट ज़ोन : 28 दिसंबर – 09 जनवरी 2026
ईस्ट ज़ोन : 10 जनवरी – 22 जनवरी 2026
साउथ ज़ोन : 23 जनवरी – 04 फरवरी 2026

5 फरवरी को अभातेयुप की संपूर्ण टीम तथा 6 फरवरी को देश-विदेश की शाखा परिषदों को एक-एक घंटे का समय आवंटित किया गया। जिसमें किशोरों और युवाओं ने अपनी सक्रिय सहभागिता से इस जप को सशक्त बनाया।

सहप्रभारी विनोद मुथा ने जानकारी दी इस आयोजन का प्रमुख उद्देश्य तेरापंथ के एकादशम अधिशास्ता परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी के विहार प्रवास की शुभकामना एवं योगक्षेम वर्ष की सफलता हेतु मंगलकामना करना था।

विशेष उल्लेखनीय है कि अभातेयुप प्रबंध मंडल एवं टीम ने मध्यरात्रि 12 बजे से प्रातः 6 बजे तक निरंतर जप कर अनुशासन, समर्पण एवं संगठन शक्ति का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। श्री अभिषेक जैन (केसिंगा) ने लगातार 54 दिनों तक मध्यरात्रि में नियमित एक घंटे जप कर अद्भुत साधना का परिचय दिया।

'अभ्यर्थना 2.0' केवल एक जप अनुष्ठान नहीं, बल्कि तेरापंथ की युवा शक्ति की एकजुटता, अटूट श्रद्धा और गहन आध्यात्मिक प्रतिबद्धता का जीवंत उदाहरण बनकर उभरा है।

यह आयोजन आने वाली पीढ़ी के लिए प्रेरणा का दिव्य स्रोत सिद्ध हुआ है। इस पावन संकल्प को साकार रूप दिया तपोयज्ञ टीम ने — आदित्य संचेती, भूपेश खमेसरा, देवेंद्र निमानी, कमलेश चोपड़ा एवं मुकेश सिंघवी — जिनके समर्पण, संयम और सतत प्रयास ने इस महाअनुष्ठान को ऐतिहासिक ऊँचाई प्रदान की।

54 दिनों तक अखंड 6700 से ज्यादा घंटे जाप में जुड़े 300 से अधिक परिषद के तेरापंथी युवा एवं किशोर

ज़ोन वाइज डिटेल

प्रत्येक ज़ोन से सर्वाधिक जप करने वाली 5-5 परिषदें

नॉर्थ ज़ोन (15 दिसंबर – 27 दिसंबर)
परिषदों की संख्या : 92
कुल जप घंटे : 1,502
1. लुधियाना
2. सिरसा
3. उदयपुर
4. जगराओं
5. बालोतरा

वेस्ट ज़ोन (28 दिसंबर – 09 जनवरी)
परिषदों की संख्या : 102
कुल जप घंटे : 1,878
1. सूरत
2. जोगेश्वरी
3. अहमदाबाद पूर्व
4. रतलाम
5. अहमदाबाद उत्तर 48 घंटे जप

ईस्ट ज़ोन (10 जनवरी – 22 जनवरी)
परिषदों की संख्या: 73
कुल जप घंटे : 2,043
1. उत्तर कोलकाता
2. राजनांदगांव
3. पूर्वांचल
4. उत्तर हावड़ा
5. साउथ कोलकाता

साउथ ज़ोन (23 जनवरी – 04 फ़रवरी)
परिषदों की संख्या : 44
कुल जप घंटे : 1,271
1. हैदराबाद
2. विजयनगर
3. गांधीनगर बैंगलोर
4. टी. दासरहल्ली
5. चेन्नई
5. राजाजीनगर

इसी के साथ अभातेयुप टीम द्वारा 348 घंटे एवं जैन तेरापंथ न्यूज़ के प्रतिनिधियों द्वारा 36 घंटे जप किया गया।

अणुव्रत स्थापना दिवस पर नशामुक्ति मैराथन का सफल आयोजन

नई दिल्ली।

समाज को नशे जैसी घातक प्रवृत्तियों से दूर रखने तथा स्वस्थ, जागरूक एवं संस्कारित जीवनशैली को बढ़ावा देने के उद्देश्य से अणुव्रत समिति दिल्ली द्वारा यमुना स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में एक विशाल नशामुक्ति जन-जागरूकता मैराथन का आयोजन किया गया।

इस प्रेरणादायी मैराथन में लगभग 4000 युवाओं, विद्यार्थियों, महिलाओं एवं समाज के विभिन्न वर्गों के नागरिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रतिभागियों ने 'स्वस्थ युवा – सशक्त राष्ट्र' जैसे प्रेरक संदेशों के माध्यम से जनमानस को व्यसनमुक्त जीवन अपनाने का आह्वान किया। कार्यक्रम की विशेष गरिमा बहुश्रुत मुनि श्री उदित कुमार जी की पावन उपस्थिति से बढ़ी। अपने प्रेरक उद्बोधन में मुनि श्री ने कहा — नशा मनुष्य की विवेक शक्ति को नष्ट करता है, जबकि संयम और सदाचार जीवन को उन्नति, शांति एवं आत्मबल प्रदान करते हैं। यदि युवा वर्ग दृढ़ संकल्प ले ले, तो नशामुक्त समाज का निर्माण निश्चित है। मुनि श्री ने युवाओं को आत्मअनुशासन, सकारात्मक सोच तथा नैतिक मूल्यों को जीवन में अपनाने की प्रेरणा देते हुए कहा कि सच्ची प्रगति वही है, जो व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक रूप से सशक्त बनाती है। मैराथन में सान्निध्य प्रदान करने के पश्चात् मुनि श्री तेरापंथ भवन, सूर्यनगर पधारे, जहाँ अणुव्रत समिति गाजियाबाद द्वारा अणुव्रत स्थापना दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुनि श्री के प्रेरक उद्बोधन के साथ स्थानीय निगम पार्षद कृष्ण कुमार खेमका ने भी अणुव्रत आंदोलन के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए आचार्य श्री तुलसी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। सम्पूर्ण कार्यक्रम अत्यंत प्रेरणादायी एवं प्रभावशाली रहा।

स्व. शासनश्री साध्वी सरोज कुमारीजी के प्रति

● **मुनि कमलकुमार** ●

मुनि गणेश उपदेश से, जाग उठा वैराग
तुलसी मुख दीक्षा ग्रही, जगा परम सौभाग।।
महाप्रज्ञ महाश्रमण से, मिला खूब सत्कार
शासनश्री साध्वी बनी, जन मन हर्ष अपार।।
लाडां-कनक-विश्रुतविभा, महा सतियां जी तीन
कृपा पात्र बनकर रही, आत्म ध्यान में लीन।।
संथारा स्वीकार कर, किया है अनुपम काम
सरोज कुमारी का हुआ अमर संघ में नाम।।
चढ़ते बढ़ते ही रहे प्रतिपल अब परिणाम
यही भावना भा रहे हम सब आठों याम।।
महाश्रमण गुरुदेव का है व्यक्तित्व विराट
सभा सुधर्मा में लगा स्मृति सभा का ठाठ।।
करके क्रमशः साधना प्राप्त करें शिव धाम
जन्म मरण के चक्र से कमल वरें विश्राम।।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
09 मार्च - 15 मार्च 2026

संक्षिप्त खबर

जप अभ्यर्थना 2.0 के अंतर्गत 54 दिनों तक लगातार अखण्ड जाप

विजयनगर। सर्वांगीण विकास का लक्ष्य रखने वाली संस्था अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत के नेतृत्व में नेपाल के साथ साथ पूरे देश की 368 परिषदो में (54 दिनों तक लगातार) जप अभ्यर्थना 2.0 के माध्यम से अखंड जाप का आयोजन किया। इसी कड़ी मे तेरापंथ युवक परिषद विजयनगर से कुल 157 घंटे युवा एवं किशोर साथी जप के क्रम में जुड़ें।

फिट युवा हिट युवा के तहत योग कार्यक्रम का आयोजन

उदयपुर। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा निर्देशित फिट युवा हिट के तहत निरंतर कार्यक्रम की श्रंखला में आज प्रातः तेरापंथ युवक परिषद उदयपुर द्वारा प्रोफेशनल योग प्रशिक्षिका डॉ. शुभा सुराणा एवं टीम के गाइडेंस में योग शिविर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत प्रातः 8:15 बजे हुई। कई प्रकार के आसन और व्यायाम द्वारा शरीर को कैसे फिट रखा जाए इस बारे में बताया गया। योग और व्यायाम के पश्चात ट्रेनर रुचिका बिलोची और ज्योति द्वारा जुंबा योगा कराया गया। इस अवसर पर अभातेयुप से अभिषेक पोखरना, अजीत छाजेड़, संदीप हिंगड़, भूपेश खमेसरा, तेयुप अध्यक्ष अशोक चोरड़िया की उपस्थित रही।

ATDC की नई OPG मशीन का उद्घाटन

पूर्वांचल कोलकाता। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा निर्देशित जैन संस्कार विधि से तेरापंथ युवक परिषद, पूर्वांचल कोलकाता ATDC मैं नई OPG मशीन का उदघाटन दिनांक 19, फरवरी 2026 किया गया। सर्वप्रथम नमस्कार महामंत्र का जाप से जैन संस्कारक विजय बरमेचा द्वारा किया गया। तत् पश्चात संपूर्ण जैन संस्कार विधि द्वारा नई मशीन का उदघाटन का कार्यक्रम संपादित कराया । ATDC के परामर्शक रवि दुगड़, पूर्वाध्यक्ष रतन लाल श्यामसुखा, अध्यक्ष राजीव बोथरा, उपाध्यक्ष द्वितीय आशीष लिंगा, सहमंत्री प्रथम लोकेश दुगड़ संगठन मंत्री मनोज श्यामसुखा, भारत नखत एवं श्री हर्ष सिरोहिया आदि की उपस्थिति रही।

रक्तदान शिविर का आयोजन

उदयपुर। एमबीडीडी के तहत अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद उदयपुर और बार एसोसिएशन के संयुक्त तत्वावधान में बार सभागार में रक्तदान शिविर का आयोजन। कैम्प की शुरुआत जिला एवं सत्र न्यायाधीश ज्ञान प्रकाश गुप्ता द्वारा दीप प्रज्ज्वलन कर की गई। इस शिविर में कुल 51 यूनिट रक्तदान एकत्रित हुआ। रक्तदान शिविर में अभातेयुप व तेयुप द्वारा संचालित एटीडीसी की ओर से फ्री डेंटल चेक अप, बीपी और सुगर चेक अप की सुविधा उपलब्ध कराई गई। इस अवसर पर नमित मेहता जिला कलेक्टर, गणपत विश्नोई ADJ, ओसवाल सभा अध्यक्ष प्रकाश कोठारी और महामंत्री प्रमिला जैन, अभातेयुप से संदीप हिंगड़ सहित कई सदस्य उपस्थित थे।

सेवा कार्यक्रम

गंगाशहर। तेरापंथ युवक परिषद ट्रस्ट गंगाशहर द्वारा आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर की पांचवी वर्षगांठ के अंतर्गत राजकीय सेटेलाइट हॉस्पिटल गंगाशहर में सेवा कार्य के अंतर्गत मरीजों की सार संभल की गई। इस अवसर पर जतन दुगड़, महेन्द्र चोपड़ा, बच्छराज रांका, हॉस्पिटल के प्रभारी डॉ मुकेश वाल्मीकि की गरिमामय उपस्थिति रही। प्रभारी विजेंद्र छाजेड़ ने बताया कि इस विशेष सेंटर में सभी प्रकार की जांचे किफायती दरों पर की जाती है

मंगल भावना कार्यक्रम का हुआ आयोजन

कोकराझार।

तेरापंथ धर्मसंघ के 11वें आचार्य श्री महाश्रमण जी के विद्वान् सुशिष्य मुनि आनंद कुमार जी 'कालू' एवं सहवर्ती मुनि विकास कुमार जी ठाणा -2 के पावन सान्निध्य में मंगल भावना कार्यक्रम आयोजित किया गया।कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि आनंद कुमार जी 'कालू' के महामंत्रोच्चार के साथ हुआ। इस मौके पर मुनि आनंद कुमार जी 'कालू' ने अपने मंगल पाथेय में कहा कि संतों का लगा रहता है आना जाना, उनका नहीं कोई ठिकाना। संत किसी भी एक जगह पर नहीं रह सकते। जिस तरह बहता पानी निर्मला, पड़ा गंदीला होय, साधु तो रमता भला, दाग न लागे कोय'। इस तरह संतों को भी मोह माया त्याग कर हमेशा विहार करते रहना चाहिए। मुनिश्री ने आगे कहा कि व्यक्ति को सरल व गंभीर होना चाहिए। व्यक्ति को केश की तरह मुलायम, मोमबत्ती की तरह प्रकाशित, सुई की तरह जोड़ना, कंधी की तरह सुलझाने का प्रयास करना चाहिए। ठीक वैसे ही सभी संस्थाओं को मिल-जुल कर काम करके एकरूपता दिखानी चाहिए। साधु-साध्वियां, श्रावक-श्राविका धर्म संघ के अभिन्न अंग हैं। जैसे सलिल की शोभा कंगन से होती है, वैसे ही मणि की शोभा धर्म संघ के साधु साध्वियों से होती है। ज्ञान, दर्शन, चारित्र व तप की आराधना सभी को करनी है। हमारे जाने के बाद श्रावक समाज अरमणीक मत बनना, रमणीक बनने का प्रयास करना। तेरापंथ सभा, तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथ महिला मंडल एवं ज्ञानशाला परिवार सभी के लिए मुनि आनंद कुमार जी 'कालू एवं अपने सहवर्ती संत मुनि विकास कुमार जी ने आशीर्वाद दिए। इस अवसर पर जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष किशनलाल नाहटा ने बताया कि जैन धर्म के सभी साधु-संत चार महीना चातुर्मास के लिए एक जगह स्थित होकर धर्म आराधना में लीन हो जाते हैं। इस अवसर पर तेरापंथ महिला मंडल की बहिनो द्वारा सामूहिक विदाई गीत प्रस्तुत किया गया, कार्यक्रम का सफल संचालन तेरापंथी सभा के मंत्री दिलीप सेठिया ने किया।

शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी की स्मृति में

शासन माता की अमर कहानी हर अधरों पर जुबानी

● साध्वी श्री गुरूयशा, साध्वी श्री जयंतप्रभा ●

शासन माता की अमर कहानी, हर अधरों पर जुबानी।
बलिहारी जाता सारा संसार है।
हो माता! चरणों में प्रणति बारंबार है।।

चंदेरी की दिव्यमणी में सागर सी गहराई।
शिखरों छूने वाली तेरी कार्य शक्ति ऊंचाई।
समता तोली भापी नहीं जाती, पाई थी अद्भुत ख्याति।
तेरी महिमा तो अपरंपर है।।

जो भी आता सन्निधि में वो सम्मोहित हो जाता।
जीवन भर वो भूल न पाता तेरा ही बन जाता।
बहता ममता का स्रोत शुभंकर, दृष्टि सम रहती सब पर।
तेरी क्षमता का आर न पार है।

सद्संस्कारों से कोमल कलियों को सुरभित करती।
अमृत वचनों से प्राणों में नव स्पंदन तुम भरती।
इतनी जल्दी तुम छोड़ दोगी, हम से मुख मोड़ लोगी।
स्मृतियों में बसता दिव्य दिदार है।।

शासन माता सम्बोधन से गुरुवर ने विरूदाया।
अमृत मोच्छव गण उपवन में, अभिनव खुशियां लाया।
निष्ठा पंचक से थी अनुरक्ति, गुरू चरणों से गहरी प्रीति।
खोला शिवपुर को तुमने द्वार है।।

सेवा कर गरूओं की तुमने अर्जित की पुन्याई।
माझी बन गुरू महाश्रमण ने नैय्या पार लगाई।
प्यासे नयनों की प्यास बुझाओ, दर्शन दे तृप्त बनाओ।
सुन लो अन्तरदिल की पुकार है।

योगक्षेम वर्ष का अद्भुत होगा भव्य नजारा।
साक्षी नजरों में उभरेगा, वो अतीत उजियारा।
यादें स्मृतियों में रंग भरेगी, सपने साकार करेगी।
गुरू महाश्रमण साया सुखकार है।।

लय- मेरी आशा के अमर

तेरापंथ-मेरापंथ कार्यशाला का आयोजन

उत्तरपाड़ा।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सानिध्य में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के निर्देशन में तेरापंथ-मेरापंथ कार्यशाला का आयोजन जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, उत्तरपाड़ा द्वारा माखला स्थित रितिज हॉल में किया गया।

कार्यशाला में प्रशिक्षक, उपासक सुरेन्द्र सेठिया थे। कार्यशाला में लगभग 68 संभागी थे। इस अवसर पर उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा - आचार्य भिक्षु तेरापंथ धर्म संघ के संस्थापक थे। उन्होंने आचार विचार व्यवस्थागत में आई शिथिलता को दूर करने के लिए धर्म क्रांति की, वह धर्म क्रांति तेरापंथ के रूप में विख्यात हुई। आचार्य भिक्षु विचक्षण, विलक्षण, नक्षत्री महापुरुष थे। वे अखंड पुन्यो के पंज, मारवाड़ के घोरि, चिन्तनशील, आत्मार्थी पापभीरू आचार्य को तेरापंथ की पहचान एक आचार एक विचार एक आचार्य, एक संविधान, एक गुरु की परंपरा ही तेरापंथ का अर्थ है। आत्मोत्सर्ग अहंकार और ममकार का विसर्जन तेरापेथ का हार्ट है। साध्य के लिए साधन भी शुद्ध होना चाहिए। संयमी दान मोक्ष का मार्ग और असंयमी दान संसार का मार्ग। ज्ञानदान, अभयदान संयतिदान, धर्मदान के भेद है। सुपात्रदान, जागरूकता, संयम, समता धर्म के तत्व हैं। जो मूर्छा में जीते है वे मूर्ख होते हैं। जो जागृत अवस्था में जीते हैं वे समझदार होते है। जागरूकता के बिना साधना संभव नही। सभी श्रावक श्राविकाओं को तेरापंथ मेरापंथ के दर्शन को समझना चाहिए।

इस अवसर पर मुनि परमानंद ने कहा- आचार्य भिक्षु साधना में दृढ़ थे। उन्होंने धर्मक्रांति कर तेरापंथ का मार्ग दिखलाया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि कुणाल कुमार जी के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, उत्तरपाड़ा के अध्यक्ष निकेश सठिया ने किया। इस अवसर पर उत्तरपाड़ा की बहनों ने सुमधुर गीत का संगान किया। उत्तर पाड़ा नगरपालिका के चेयरमेन दिलीप यादव ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद ने किया।

संक्षिप्त खबर

अणुव्रत स्थापना दिवस समारोह का हुआ आयोजन

कटक। अणुविभा के निर्देशानुसार अणुव्रत समिति कटक द्वारा आज 78 वाँ अणुव्रत स्थापना दिवस समारोह स्थानीय तेरापंथ भवन कटक में मनाया गया। समिति की ओर से जन जागरूकता हेतु रैली का शुभारंभ अणुव्रत ध्वजारोहण करके किया गया। अणुव्रत के नारे, उदघोष द्वारा रैली में सभी संस्थाओं ने भागीदारी निभाई। रैली के संपन्न होने पर तेरापंथ भवन में आज के कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ। कार्यक्रम का प्रारंभ पूर्व प्रवक्ता उपासक पानमल नाहटा द्वारा नमस्कार महामंत्र के सामूहिक संगान द्वारा किया गया। सभी कार्य मंगल हो इस हेतु मंगलाचरण समिति की बहनों द्वारा किया गया। कटक अणुव्रत समिति के संस्थापक सुनील कोठारी द्वारा आज अणुव्रत आचार संहिता का वाचन किया गया। आज के इस कार्यक्रम में सभी संस्थाओं तेरापंथ सभा, भवन समिति, तेरापंथ महिला मंडल, युवक परिषद, कटक ज्ञानशाला की उपस्थिति रही। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष संतोष सिंघी द्वारा स्वागत भाषण द्वारा सभी पदाधिकारीयो का स्वागत किया गया। आज के मुख्य अतिथि डिप्टी कमिश्नर ऑफ़ कटक म्युनिसिपालिटी जुबली चरण साहू को उत्तरी पहनाकर स्वागत किया गया। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों द्वारा व्यसन मुक्ति पर एक सुन्दर नाटक प्रस्तुत किया गया। समिति के निवर्तमान अध्यक्ष मुकेश डूंगरवाल द्वारा अणुव्रत के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। आज के कार्यक्रम का कुशल संचालन निशा पुगलिया द्वारा किया गया। आभार ज्ञापन संगठन मंत्री मोनिका सेठिया द्वारा किया गया।

चित समाधि शिविर का आयोजन

किलपॉक, चेन्नई। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा किलपॉक द्वारा संघ के 100 व्यक्तियों ने आचार्य श्री महाश्रमण जी के सानिध्य में चित्त समाधि शिविर मे भाग लिया यह शिविर आध्यात्मिक विकास और आत्म-शांति के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करता है। यह एक महत्वपूर्ण यात्रा है जिसमें वे अपने आध्यात्मिक अनुभवों को अपने दैनिक जीवन में लागू करने का अवसर मिला। आचार्य श्री महाश्रमण जी के सानिध्य में इस शिविर का आयोज एक बड़ा सौभाग्य है, और इसमें भाग लेने वाले सभी व्यक्तियों को अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने का अवसर मिला।

वाकाथोन का सफल आयोजन

पूर्वांचल कोलकाता। टीपीएफ पूर्वांचल कोलकाता ने टीपीएफ नार्थ हावड़ा और कोलकाता जनरल के साथ मिलकर वाकथन का आयोजन decathlon, sector V, Kolkata में किया। कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण के साथ किया गया, इसके पश्चात जुम्बा का कार्यक्रम हुआ जिसमें सभी ने काफ़ी आनन्द और उत्साह के साथ भागं लिया। इस दौरान के मुख्य अतिथि RJ Rakesh थे ।कार्यक्रम में पूर्वांचल सभा के मुख्य ट्रस्टी बाबूलाल गंग, टीपीएफ के ट्रस्टी सुशील चोपड़ा, टीपीए पूर्वांचल के अध्यक्ष राकेश सिंघी और उनकी टीम काफ़ी सक्रिय रही। सभी संस्था के पदाधिकारियों और सदस्यों की अच्छी उपस्थिति रही। BSF के जवानों ने भी इस कार्यक्रम में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। इस walkathon में लगभाग 450 लोगों नें हिस्सा लिया।

ईको फ्रेंडली फेस्टिवल का प्रचार प्रसार

हावड़ा। अणुविभा द्वारा निर्देशित 'ईको फ्रेंडली फेस्टिवल' का प्रचार प्रसार अणुव्रत समिति हावड़ा द्वारा क्षेत्र के विभिन्न जगहों पर किया जा रहा है। अणुव्रत समिति हावड़ा ईको फ्रेंडली फेस्टिवल के विषय में संक्षिप्त जानकारी प्रदान करते हुए पर्यावरण के प्रति जागरूक रहकर होली मनाने के लिया व्यापक प्रचार प्रसार किया गया। इसी क्रम में लघु नाटिका एवं बैनर द्वारा भी प्रचार किया गया।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

■ **सूरत।** सुजानगढ़ निवासी सूरत प्रवासी स्व अशोक जी सुराणा के पुत्र-पुत्रवधू कुशल -स्वाति सुराणा के प्रांगण में पुत्र रत्न का जन्म हुआ। जिसका नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक धर्मचंद सामसूखा, मनीष कुमार मालू ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

पाणिग्रहन संस्कार

■ **सूरत।** खजवाना निवासी नंदुरबार प्रवासी रविन्द्र कोठारी के सुपुत्र दिपेश कोठारी का शुभ पाणिग्रहण संस्कार डेगानी निवासी सूरत प्रवासी रिखबचंद जोगड़ की सुपुत्री ज्योती जैन के साथ जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकान्त खटेड, बजरंग बैद ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

■ **गंगाशहर।** निर्मल राखेचा के सुपुत्र अरिहन्त राखेचा का पाणिग्रहण संस्कार कन्हैया लाल दुगड़ की सुपुत्री रीना दुगड़ के साथ जैन संस्कार विधि से समता भवन, नई लाइन गंगाशहर में जैन संस्कारक 'युवक रत्न' राजेन्द्र कुमार सेठिया, देवेन्द्र डागा, विपिन बोथरा और विनीत बोथरा ने विवाह संस्कार का सारा मांगलिक आयोजन विधि विधान पूर्वक सानंद संपन्न करवाया।

■ **सूरत।** आसींद निवासी सूरत प्रवासी स्व. गणपत लाल जैन के सुपुत्र श्री निलेश कुमार जैन का शुभ पाणिग्रहण संस्कार जलगांव निवासी जलगांव प्रवासी अनिल कुमार जैन की सुपुत्री सोनिया जैन के साथ जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकान्त खटेड, धर्मचंद सामसूखा ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

विशेष कार्यशाला का हुआ आयोजन

गांधीनगर, बैंगलोर।

आचार्य श्री महाश्रमणजी के सुशिष्या साध्वी संयमलता जी ठाणा (4) के सानिध्य में अपनी आभा को शुद्ध करें- एक विशेष कार्यशाला का आयोजन हुआ। प्रशांत (6) और तविश (4) ने भी इस कार्यशाला में भाग लिया।

प्रशिक्षिका पूजा गुगलिया एवं रेणु कोठारी ने आभा का मतलब, वह कैसे काम करता है, उसका प्रभाव और उसे कैसे शुद्ध करें के बारे में अपना वक्तव्य दिया। उन्होंने दो छोटे-छोटे प्रेक्षाध्यान के प्रयोग भी करवाए।

साध्वी मार्दवश्री जी ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए आभा का महत्व बताया।

साध्वी संयमलता जी ने अपने उद्बोधन में कहा– स्मार्ट(smart) दिखना चाहते हैं या बनना? इसकी व्याख्या करते हुए कहा स्मार्ट दिखने के लिए तो स्मार्ट मोबाइल या महंगा मोबाइल का उपयोग करते हैं, स्मार्ट बनने के लिए एक स्माइल (smile) काफी है। स्माइल से हमारी सकारात्मक ऊर्जा बढ़ती है उससे हमारी आभा शुद्ध होती है।

प्रेक्षावाहिनी सह संचालक महावीर मूथा ने अपने अनुभवों और अपनी प्रेक्षाध्यान की यात्रा के बारे में अपने विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने अपने शारीरिक लाभ का उल्लेख किया– जैसे Vertigo, Psoriasis ठीक हो गए। उनकी तपस्या के प्रति रुचि और क्षमता बढ़ती गई।

तेरापंथ सभा गांधीनगर मंत्री विनोद छाजेड़ ने साध्वीश्री जी के स्वस्थ स्वास्थ की मंगल कामना करते हुए गांधीनगर भवन पधारने हेतु निवेदन किया। महावीर मुथा के तपस्या की अनुमोदना की एवं प्रेक्षा प्रशिक्षिका पूजा गुगलिया एवं रेणु कोठारी के श्रम की सराहना की।

इस अवसर पर नवीन सिरोहिया, अशोक कोठारी भी उपस्थित थे। अंत में प्रेक्षावाहिनी संचालक राखी नाहर ने आभार प्रकट किया।

प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का हुआ आयोजन

उत्तरपाड़ा।

आचार्यश्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमारजी ठाणा 3 के सान्निध्य में तथा प्रेक्षा फाऊन्डेशन के तत्वावधान में तथा तेरापंथ सभा के सहयोग से प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन उत्तरपाड़ा स्थित शांतिनगर में हुआ। जिसमें 35 संभागी व ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी भी उपस्थित थे।

इस अवसर पर मुनि जिनेशकुमारजी ने कहा- भौतिकता की अंधी दौड़ में व्यक्ती तनाव से ग्रसित है। आज की सबसे बड़ी बीमारी तनाव है। तनाव मानसिक असंतुलन का बड़ा कारण है।

जहां एकांगी दृष्टिकोण होता है वहां विलासिता का भाव बढ़ता है। तनाव मुक्ति का उपाय है-कायोत्सर्ग। कायोत्सर्ग प्रेक्षाध्यान व अध्यात्म की आधार भूमि है। कायोत्सर्ग कर्म निर्जरा का कारण है। अभ्यांतर तप है।

राजा चन्द्रावतंसक ने कायोत्सर्ग की साधना से परम तत्व को पाया। कायोत्सर्ग से शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक स्वास्थ्य को प्राप्त होता है। मुनिजी ने आगे कहा कायोत्सर्ग के तीन अर्थ–शिथिलीकरण, सहिष्णुता, अभय है।

अभय धर्म का रहस्य, धर्म का आदि बिन्दु है, कष्टों को, दर्द को सहन करना संहिष्णुता हो प्रत्येक अवदव के प्रति जागरुकता रखना कायोत्सर्ग है। कायोत्सर्ग से शरीर में स्फूर्ति आता है। अनिद्रा को दूर करने वाला तत्व है। मुनिजी ने कायोत्सर्ग का प्रयोग कराया व ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों आदि को भी संबोध दिया। प्रेक्षा प्रशिक्षिका मनीषा नाहटा, व श्रीमति डोसी ने विचार रखे व प्रयोग कराएं।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
09 मार्च - 15 मार्च 2026

संबोधि

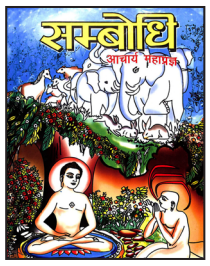

परिशिष्ट

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

(३) वैयावृत्य

वैयावृत्य का अर्थ है-सेवा, शुश्रूषा। गौतम ने महावीर से पूछा- 'भंते ! सेवा करने से क्या होता है?' महावीर ने कहा- 'गौतम! सेवा करने वाला साधक तीर्थंकर गौत्र नाम का उपार्जन कर लेता है।' अस्तित्व-बुद्धत्व की अवस्था को उपलब्ध होकर लोक-कल्याण का पथ प्रशस्त करता है। तपःसाधना विजातीय तत्त्व से मुक्त करने की साधना है। महावीर ने कहा– 'ऐहिक फल प्राप्ति के लिए तप मत करो, पारलौकिक आकांक्षा रख कर तप मत करो और न यश, प्रतिष्ठा, प्रशंसा के लिए तप करो। तप करो-निर्जरा के लिए। चेतना को आवृत करने वाले कार्मण शरीर को प्रकंपित करने के लिए तप करो।' इससे यह स्पष्ट है कि वैयावृत्य में कोई लिप्सा नहीं रहती। इसने मेरी सेवा की, इसलिए मैं करूं या इसलिए मैं करूं कि जब मुझे जरूरत पड़ेगी, तब यह मेरी करेगा, मेरा इसके साथ संबंध है, इसलिए करूं-आदि समस्त विकल्प तथा सकामता वैयावृत्य की विशुद्धता नहीं है। वैयावृत्य ऋण-मुक्ति है। अपने कर्म-मल को शुद्ध करना है। वह पूर्ण निष्काम है। जहां न किसी को अपना बनाने का भाव है और न कोई कामना है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने लिखा है-'किसी के काम में व्याप्त होना या व्यापार करना ही सेवा नहीं है। सेवा का और कुछ रहस्य है। वह रहस्य है-तादात्म्य की स्थापना करना। समग्रता की अनुभूति का प्रयोग है सेवा। दूसरे व्यक्ति के साथ इतना तादात्म्य कर लेना कि उसका दुःख और मेरा दुःख कोई दो चीज न रहे, दोनों एक हो जाये। उसकी अपेक्षा और मेरी अपेक्षा दो न रहे, एक हो जाए। यह जो तादात्म्य की अनुभूति है, समत्व की अनुभूति है, एकत्व की अनुभूति है, यह है सेवा। काम करना और करवाना, यह व्यवहार मात्र है। यह अन्तर तप कैसे हो सकता है? अन्तर तप उसमें है कि सेवा करने वाला व्यक्ति, इतना बदल जाता है, उसमें इतनी करुणा आ जाती है, अहं का इतना विसर्जन हो जाता है कि वह यह कभी नहीं मानता कि यह शरीर मेरा है और वह उसका। वह यह कभी नहीं मानता कि यह जरूरत उसकी है और यह मेरी। अभिन्नता की बात सेवा है।

(४) स्वाध्याय

स्वाध्याय और ध्यान में सतत अभ्यस्त रहने वाला व्यक्ति पुरातन कर्म-मल को दूर कर देता है, जैसे अग्नि सोने में मिश्रित मल को। इस आर्षवाणी से स्वाध्याय का महत्त्व जाना जा सकता है। तपोयोग में स्वाध्याय का स्थान ध्यान से पूर्व है। स्वाध्याय ध्यान का द्वार है। बीज बोने से पूर्व जैसे खेत को उपयुक्त बनाया जाता है, स्वाध्याय ध्यान के बीज-वपन का आधार है। स्वाध्याय से वृत्तियां शांत हो जाती हैं, चित्त का भटकाव कम हो जाता है, साधक अपने अंतस्तल में उठने वाली तरंगों से सम्यग् परिचित हो जाता है, तब चित्त का किसी विषय पर स्थिरीकरण या निरोध करना सहज हो जाता है।

स्वाध्याय अन्तर तप होने के कारण केवल पठन-पाठन, श्रवण तक सीमित नहीं है। वह है सत्य का प्रत्यक्षीकरण। सिर्फ पठन-पाठन करने से सत्य का अनुभव नहीं होता। धर्म केवल विश्वासगम्य नहीं है। वह तो जीवन-बोध की निश्चित दिशा देता है। (क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ की तपस्वी साध्वियां

आचार्यश्री रायचंद जी युग

साध्वीश्री दोलांजी (मलाबावड़ी राणावास के पास) दीक्षा क्रमांक 249

साध्वीश्री बड़ी तपस्विनी थी। आप संयम का रसास्वादन करती हुई तप में लहली हो गई। आपकी तप की तालिका इस प्रकार है– 5/4, 7/1, 10/3, 11/4, 12/10, 13/4, 14/1, 15/1, 16/1, 19/1, 20/1, 22/1, 30/4, 33/1, 37/1

– साभार : शासन समुद्र –

श्रमण महावीर

सतत जागरण

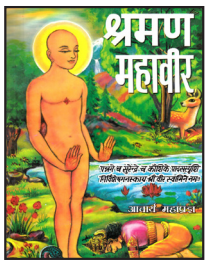

भगवान ने कहा- 'आनन्द ने जो कहा है, वह जागरण के क्षण में कहा है। वह सही है। उसे प्रायश्चित्त करने की कोई आवश्यकता नहीं है। प्रमाद तुमने किया है। तुमने जो कहा, वह सही नहीं है, इसलिए तुम ही प्रायश्चित्त करो। आनन्द के पास जाओ, उसकी सत्यता को समर्थन दो और क्षमायाचना करो।'

गौतम तत्काल आनन्द के उपासना-गृह में पहुंचे। भगवान के प्रधान शिष्य का आनन्द के पास जाना, उसके ज्ञान का समर्थन करना, अपने प्रमाद का प्रायश्चित्त करना और क्षमा मांगना व्यक्ति-निर्माण की दिशा में कितना अद्भुत प्रयोग है।'

भगवान जानते थे कि असत्य के समर्थन से गौतम की प्रतिष्ठा सुरक्षित नहीं रह सकती। सत्यवादी आनन्द को झुठलाकर यदि गौतम की प्रतिष्ठा को बचाने का यत्न किया जाता तो गौतम का अहं अमर हो जाता, उनकी आत्मा मर जाती। आत्मा का हनन भगवान को क्षण भर के लिए भी इष्ट नहीं था। फिर वे क्या करते-गौतम की आत्मा को बचाते या उनके अहं को?

महावीर के धर्म का पहला पाठ है-जागरण और अंतिम पाठ है-जागरण। बीच का कोई भी पाठ जागरण की भाषा से शून्य नहीं है। जहां मूर्च्छा आई वहां महावीर का धर्म विदा हो गया। मूर्च्छा और उनका धर्म-दोनों एक साथ नहीं चल सकते।

महाशतक उपासना-गृह में धर्म की आराधना कर रहा था। उसकी पत्नी रेवती बहुत निर्दय थी। उसने महाशतक को विचलित करने का प्रयत्न किया। उसकी ध्यान-धारा विच्छिन्न नहीं हुई। उसका साधना क्रम अविचल रहा। कुछ दिन बाद रेवती ने फिर वैसा प्रयत्न किया। इस बार महाशतक कुद्ध हो गया। उसने रेवती की भर्त्सना की। क्रोध के आवेश में कहा- 'रेवती! तुम इसी सप्ताह विशूचिका से पीड़ित होकर मर जाओगी। मृत्यु के पश्चात् तुम नरक में जन्म लोगी।'

रेवती भयभीत हो गई। वह रोग, मृत्यु और नरक का नाम सुन घबरा गई। शब्द-संसार में ये तीनों शब्द सर्वाधिक अप्रिय हैं। महाशतक ने एक साथ इन तीनों का प्रयोग कर दिया। वह सप्ताह पूरा होते-होते मर गई।

भगवान महावीर राजगृह आए। भगवान ने गौतम से कहा- 'उपासक महाशतक ने अपनी पत्नी के लिए अप्रिय शब्दों का प्रयोग किया है। तुम जाओ और उससे कहो-समत्व की साधना में तन्मय उपासक के लिए अप्रिय शब्दों का प्रयोग करना उचित नहीं है। इसलिए तुम उसका प्रायश्चित्त करो।'

गौतम महाशतक के पास गए। भगवान का संदेश उसे बताया। उसे अपने प्रमाद का अनुभव हुआ। उसने प्रायश्चित्त किया। अप्रमाद की ज्योति फिर प्रज्वलित हो गई।

आत्मा की विस्मृति के क्षण दुर्घटना के क्षण होते हैं। मानवीय जीवन में जितनी दुर्घटनाएं घटित होती हैं, वे सब इन्हीं क्षणों में होती हैं।

एक बार सम्राट् श्रेणिक का अन्तःपुर अविश्वास की आग से धधक उठा। सम्राट् को महारानी चेलना के चरित्र पर सन्देह हो गया। उसने क्रोध में अभिभूत होकर अभयकुमार को अन्तःपुर जलाने का आदेश दे दिया। सम्राट् निर्मम आदेश देकर भगवान महावीर के समवसरण में चला गया।

भगवान ने उसके प्रमाद को देखा। भगवान ने परिषद् के बीच कहा- 'संदेह बहुत बड़ा आवर्त्त है। उसमें फंसने वाली कोई भी नौका सुरक्षित नहीं रह पाती। आज श्रेणिक की नौका संदेह के आवर्त्त में फंस गई है। उसे चेलना के सतीत्व पर संदेह हो गया है। मैं देखता हूं कि कितना निर्मल, कितना अवदात और कितना उज्ज्वल चरित्र है चेलना का। फिर भी सन्देह का राहु उसे ग्रसने का प्रयास कर रहा है।'

सम्राट् की निद्रा भंग हो गई। आखें खुल गई। उसे अपने प्रमाद पर अनुताप हुआ। वह तत्काल राज-प्रासाद पहुंचा। अन्तःपुर का वैश्वानर अप्रमाद के जल से शांत हो गया। सम्राट् धन्य हो गया।

आत्मा की स्मृति के क्षण जीवन की सार्थकता के क्षण होते हैं। मानवीय जीवन में जितनी सार्थकताएं निष्पन्न होती हैं, वे सब इन्हीं क्षणों में होती हैं। (क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

कालूयशोविलास में तत्त्व निरूपण

कालूयशोविलास आचार्य श्री तुलसी द्वारा प्रणीत एक गेय काव्य है। इसका अध्येता न केवल तेरापंथ के अष्टमाचार्य श्री कालू के जीवन-चरित्र से परिचित होता है अपितु अनेक आनुषंगिक उपलब्धियों का भी वरण करता है। उनमें मुख्य हैं–

१. आगमिक तथ्यों की जानकारी

२. प्राचीन राग-रागिनियों से परिचय

३. संस्कृत, हिन्दी व राजस्थानी के शब्द-संग्रह की वृद्धि

४. काव्य-प्रणयन-कौशल

५. विविध छन्दों का ज्ञान

प्रस्तुत कृति में तत्त्व-विवेचना अनेक विधाओं में हुई है। उपमा अलंकार में भी तत्त्व का उपयोग किया गया है। शास्त्रार्थ के अनेक प्रसंग भी तत्त्व-निरूपण के माध्यम बने हैं। भगवत्-स्तुति में भी सैद्धान्तिक प्रस्तुति हुई है। कालू यशोविलास में यत्र-तत्र विकिर्ण तत्त्व-मुक्ताओं का प्राचुर्य है, पर तीसरे उल्लास की छठी, सातवीं और आठवीं ये तीनों गीतिकाएं तत्त्वज्ञान की दृष्टि से कृतिकार की अत्यन्त कृपापात्र प्रतीत होती हैं। उनमें दया, दान, अनुकम्पा के दो भेद, भगवान महावीर छद्मस्थ अवस्था में चूके, मिथ्यात्वी की करणी निरवद्य, छठे गुणस्थान में छह लेश्याओं की स्वीकृति, देशव्रती में अप्रत्याख्यान क्रिया, आर्या द्वारा आनीत भोजन साधुओं के लिए भोज्य है-आदि तथ्यों की विशद विवेचना की गई है। प्रस्तुत ग्रन्थ की कुछ तात्त्विक झलकियां इस प्रकार हैं–

१. निर्जरा और पुण्य का साहचर्य

पूज्य डालगणी व मुनि कालू के साहचर्य का वर्णन करते हुए कविवर ने लिखा है–

जिण-जिण ग्राम नगर पुर विचरै, ले ले लम्बो गेड़ जी।
छोगां-अंगज संग रहै, ज्यूं पुण्य धरम रै केड़ जी।।

(का. १/९/१५)

जैसे पुण्य निर्जरा-धर्म के साथ होता है, निर्जरा से पृथक, स्वतंत्र रूप से पुण्य का बन्ध नहीं होता, वैसे ही मुनि कालू डालगणी के साथ रहते थे। वे स्वतंत्र विहार नहीं करते थे।

स्वतंत्र पुण्य का बन्ध भी जैनाचार्यो द्वारा सम्मत है। पर आचार्य भिक्षु का मत है कि निर्जरा के साथ ही पुण्य-बंध हो सकता है। शुभ योग से दो कार्य निष्पन्न होते हैं-पूर्वबद्ध पाप कर्मों की निर्जरा और पुण्य का बंध। निष्पत्ति की अपेक्षा शुभयोग द्वीप बन जाता है। शुभ योग आश्रव और शुभ योग निर्जरा। इन दोनों के अपने-अपने कारण हैं। शुभयोग की प्रवृत्ति के दो कारण हैं–

मोहकर्म का वियोग (उपशम, क्षय, क्षयोपशम) तथा नाम कर्म का उदय। मोहकर्म का संयोग योग को अशुभ और मोहकर्म का वियोग उसे शुभ बनाता है। शुभ योग में मोहकर्म का वियोग रहता है। इसलिए उससे निर्जरा होती है। कवि प्रवर ने धर्म और पुण्य के एक दार्शनिक तथ्य को उपमा के रूप में प्रयुक्त किया है।

२. 'अष्ट' शब्द के द्वारा अनेक तात्त्विक विज्ञप्तियां

आचार्यश्री कालूगणी तेरापंथ धर्मसंघ के अष्टमाचार्य थे। 'आठ' अंक के माहात्म्य को प्रदर्शित करते हुए काव्यकार ने आठ-आठ की संख्या वाले नौ तथ्यों का नामोल्लेख किया है–

अष्ट कर्म-अरि दल दली, हो अष्टम गुणठाण।
अष्ट इला-तल ऊपरै, अष्ट महागुण-ठाण।।
गन्तुमना सुमना सदा, अष्ट मातृ-पद लीन।
महामना मथ अष्ट मद, अष्टम पद आसीन ।।
अष्ट सिद्धि आगम कथित, अष्ट आप्त-प्रतिहार्य।
अष्ट रुचक रुचिकर बणे अष्ट अंक अविकार्य ।।

(क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर
कोड स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु
abtyptt@gmail.com पर ई-मेल अथवा
8905995002 पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
09 मार्च - 15 मार्च 2026

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र **'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स'** में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. समाचार मोबाइल नं. **8905995002 पर व्हाट्सअप** अथवा **abtyptt@gmail.com** पर ई-मेल के माध्यम से भेजें।

समाचार पत्र ऑनलाइन पढ़ने के लिए
नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें।
https://terapanthtimes.org/

:: निवेदक ::
अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

नवनिर्मित तेरापंथ भवन का भव्य लोकार्पण

सूर्य नगर, दिल्ली।

सूर्य नगर स्थित नवनिर्मित तेरापंथ भवन का भव्य उद्घाटन बहुश्रुत मुनिश्री उदित कुमार जी स्वामी के पावन सान्निध्य में महासभा के अध्यक्ष महेंद्र नाहटा द्वारा अत्यंत गरिमामय वातावरण में संपन्न हुआ। प्रातःकाल प्लैटिनम वैली इंटरनेशनल स्कूल से प्रारंभ हुआ भव्य जुलूस पूरे क्षेत्र को धर्ममय बना गया। मंगलगीतों, जयघोषों और श्रद्धा से भरे भावों के साथ समाजजन तेरापंथ भवन तक पहुँचे। विधिवत् उद्घाटन के पश्चात आयोजित कार्यक्रम का प्रारंभ महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण से हुआ।

तेरापंथ सभा गाजियाबाद के अध्यक्ष सुशील सिपानी ने अपने स्वागत भाषण में सभी की उपस्थिति के लिए आभार व्यक्त किया। जयसिंह दुगड़ आदि ने साध्वी श्री संघमित्रा जी द्वारा रचित गीतिका का सुमधुर संगान प्रस्तुत किया। इस अवसर पर जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा शाहदरा के मंत्री सुरेश भंसाली, जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा गांधीनगर के अध्यक्ष निर्मल छलाणी, तेरापंथ युवक परिषद दिल्ली के अध्यक्ष पवन श्यामसुखा, तेरापंथ युवक परिषद गांधीनगर के अध्यक्ष क्रांति बरडिया, विकास मंच के मंत्री दिनेश डूंगरवाल, जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा गाजियाबाद के प्रबंध न्यासी भीकमचंद सुराणा, जैन श्वेतांबर तेरापंथ महासभा के अध्यक्ष महेंद्र नाहटा, महासभा के उपाध्यक्ष संजय खटेड़, आदि की उपस्थिति रही।

समाज के वरिष्ठ व्यक्तित्व जीतमल चौरडिया भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे। अपने ओजस्वी एवं हृदयस्पर्शी उद्बोधन में मुनिश्री ने कहा—'धार्मिक स्थिति को सुदृढ़ करने तथा नियमित धार्मिक क्रियाओं को गति प्रदान करने में एक धार्मिक स्थल की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जब दूसरों से उनका स्थान मांग कर कोई कार्यक्रम करते हैं, वहा कार्यक्रम तो हो जाता है यदि वही कार्यक्रम यदि समाज अपने भवन में करता है वह सामाजिक दृष्टि से अधिक गरिमा पूर्ण बन जाता है। मुनिश्री ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि यह भवन अब समाज का अपना घर है।

इसकी वास्तविक सार्थकता तभी सिद्ध होगी जब यहाँ अधिक से अधिक धार्मिक गतिविधियाँ, स्वाध्याय, साधना और संस्कारमय आयोजन होंगे। केवल भवन का निर्माण हो जाना ही पर्याप्त नहीं; उसे जीवंत बनाना समाज का दायित्व है।

मुनि ज्योतिर्मयकुमार जी ने भी अपने प्रासंगिक विचार रखें। अंत में गाजियाबाद सभा के मंत्री रमेश बैंगानी ने आभार ज्ञापन किया।

मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। कार्यक्रम का कुशल संचालन दिल्ली सभा के महामंत्री प्रमोद घोड़ावत ने किया।

UNLOCK HAPPINESS 5.0 सेवा प्रकल्प का आयोजन

अहमदाबाद।

World Cancer Day के अवसर पर सिविल हॉस्पिटल, कैंसर वार्ड, अहमदाबाद में एक अत्यंत संवेदनशील एवं प्रेरणादायी सेवा प्रकल्प का आयोजन किया गया।

इस सेवा प्रकल्प का उद्देश्य कैंसर से पीड़ित 3 से 18 वर्ष आयु वर्ग के नन्हे योद्धाओं के चेहरों पर मुस्कान लाना, उनके आत्मविश्वास को बढ़ाना एवं उन्हें यह एहसास कराना था। एक छोटा लेकिन प्रभावशाली संवाद सत्र Motivational Sessionलिया गया, जिसमें उन्हें मैं मजबूत हूँ, मैं हार नहीं मानूँगा, मैं ठीक हो सकता हूँ, जैसे सकारात्मक भावों के माध्यम से कैंसर से लड़ने की मानसिक शक्ति प्रदान की गई। पूरे सत्र का केंद्रबिंदु बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ाना, भय को कम करना और आशा का संचार करना रहा। इस सेवा प्रकल्प ने यह सिद्ध किया कि सेवा केवल सामग्री देने से नहीं, बल्कि समय, संवेदना और साथ देने से पूर्ण होती है। बच्चों के चेहरों पर दिखाई देती मुस्कान इस कार्यक्रम की सबसे बड़ी सफलता रही। इस सेवा प्रकल्प में तेरापंथ किशोर मंडल–अहमदाबाद के प्रभारी अक्षय संकलेचा, सह-प्रभारी मुदित छाजेड़ एवं राहुल बोरणा, Unlock Happiness 5.0 के माध्यम से यह प्रयास किया गया कि कैंसर से जूझ रहे बच्चों के जीवन में एक दिन के लिए ही सही, लेकिन आशा, आनंद और आत्मबल का दीप प्रज्वलित हो। तेरापंथ किशोर मंडल-अहमदाबाद भविष्य में भी ऐसे सेवा प्रकल्पों के माध्यम से समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाता रहेगा।

वॉकथॉन, प्रेक्षाध्यान का हुआ आयोजन

साउथ कोलकाता।

भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा निर्देशित फिट युवा हिट युवा के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद साउथ कोलकाता संग तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम कोलकाता साउथ & साउथ हावड़ा ने शारीरिक स्वास्थ्य को ध्यान रखते हुए लायंस सफारी पार्क, लेक में प्रेक्षा फाउंडेशन साउथ कोलकाता के सहयोग से Yoga योग का कार्यक्रम आयोजित किया। नवकार मंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत अध्यक्ष अंकित दुगड़ एवं कार्यकारिणी सदस्यों द्वारा की गई। तत्पश्चात लगभग 7.00 बजे WalkathoN का उदघाटन बिनोद चोरड़िया (अध्यक्ष-साउथ सभा) तथा धर्मेंद्र चोरड़िया (अध्यक्ष JITO, कोलकाता) द्वारा किया गया। अभातेयुप के उपाध्यक्ष-1 अनंत बागरेचा एवं टीपीएफ ईस्ट जोन-1 के अध्यक्ष प्रवीण सिरोहीया ने जैसे ही हरी झंडी दिखाई, तकरीबन 275 लोगों ने उत्साह के साथ इसका लाभ उठाया। 4Km लंबे इस walkathon में सभी ने एक कतार में चलते हुए हमारे आयाम फिट युवा हिट युवा के द्वारा स्वस्थ रहने की जागरूकता बढ़ाई। नवीन दुगड़ (अध्यक्ष - अणुव्रत समिति, कोलकाता), जय चोरड़िया, हर्ष दुगड़ (अभातेयुप सदस्य), नरेंद्र सिरोहीया (अध्यक्ष - TPF कोलकाता साउथ), सुनीता जैन (संयोजिका - प्रेक्षा फाउंडेशन साउथ कोलकाता), की उपस्थिति रही। मोहित बैद (निवर्तमान अध्यक्ष) ने स्वागत करते हुए Walkathon की जानकारी दी तथा सभी विशिष्ट व्यक्तियों का आभार व्यक्त किया।

सर्वाइकल कैंसर जांच शिविर का आयोजन

नागपुर।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में विश्व कैंसर दिवस अवसर पर महिलाओं में बढ़ते सर्वाइकल कैंसर की रोकथाम समय पर पहचान और जागरूकता को लेकर देशव्यापी स्तर पर एक विशाल पेप्स में टेस्ट का अभियान चलाया गया। तेरापंथ महिला मंडल नागपुर द्वारा शहर में दो जगह सीताबर्डी मातृ सेवा संघ एंव श्री कृष्णा नगर गीता प्रेम नर्सिंग होम में निःशुल्क सर्वाइकल कैंसर की जांच कैंप का आयोजन किया गया। तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा प्रमिला मालू ने शिविर का मुख्य उद्देश्य है कि महिलाओं को कैंसर के प्रति जागरूक करना एवं प्रारंभिक स्तर पर ही बीमारी की पहचान कर समय रहते उपचार उपलब्ध कराना यह टेस्ट सर्व समाज की महिलाओं का कराया गया है। मातृ सेवा संघ के एम डी डॉ. पुष्पा भावे ने मंडल की कार्यकारिणी बहनों और सभी महिलाओं को इस कैंसर की जानकारी देते हुए बताएं कि यह क्यों जरूरी है और यह भी कहा की अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल यह जो सेवा का कार्य निःशुल्क कर रही है,बहुत पुण्य का कार्य है। Pep Smare टेस्ट 45 बहनों ने करवाया है। प्रोजेक्ट डायरेक्टर कुसुम छाजेड़ वंदना सेठिया ने बहुत ही मेहनत व उत्साह के साथ कार्यक्रम को सफल बनाया।

डॉ. मेहरबानो कमाल द्वारा सेमिनार भी कराया गया ।डॉ. स्वाति मालपानी ने अपने गाइडेंस में टेस्ट करवाएं और बैनर का अवलोकन भी किया। श्रीमती मनीष नखत द्वारा वीडियो और फ्लायर बनाकर टेस्ट का प्रचार प्रसार किया गया । तेरापंथ महिला मंडल मंत्री श्रीमती सुमन मालू ने सभी का आभार में धन्यवाद ज्ञापन कर कार्यक्रम की सराहना की और सभी का उत्साह बढ़ाया।

भिक्षु भजन संध्या का भव्य आयोजन

गंगाशहर।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम (TPF), बीकानेर द्वारा आचार्य महाप्रज्ञ शिक्षा सहयोग योजना के अंतर्गत फंड रेज़िंग उद्देश्य से आयोजित भिक्षु भजन संध्या का आयोजन गंगाशहर स्थित शांतिनिकेतन (साध्वी सेवा केंद्र) में अत्यंत श्रद्धामय एवं आध्यात्मिक वातावरण में संपन्न हुआ।

कार्यक्रम का शुभारंभ एकता पुगलिया द्वारा मंगलाचरण से किया गया। TPF बीकानेर अध्यक्ष रतन छलाणी के स्वागत वक्तव्य में पधारे हुए समस्त गणमान्य अतिथियों, श्रावक-श्राविकाओं का सादर स्वागत करते हुए आचार्य महाप्रज्ञ शिक्षा सहयोग योजना की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि यह योजना समाज के पात्र विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान कर उनकी उच्च शिक्षा में सहयोग एवं सर्वांगीण विकास का एक प्रभावी माध्यम है। इस अवसर पर TPF राष्ट्रीय अध्यक्ष हिम्मत मांडोत ने अपने उद्बोधन में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि TPF ने प्रोफेशनल्स को एक ऐसे मंच से जोड़ा है, जहाँ आध्यात्मिकता का भी सशक्त जुड़ाव है।

वर्तमान में TPF के देशभर में 11,000 से अधिक सदस्य समाज सेवा, शिक्षा एवं विभिन्न सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। उन्होंने आचार्य महाप्रज्ञ शिक्षा सहयोग योजना के उद्देश्य को रेखांकित करते हुए समाजजनों से इस पुण्य कार्य से जुड़ने का आह्वान किया। इन प्रेरक विचारों से प्रेरित होकर उपस्थित श्रावक समाज के अनेक सदस्यों ने शिक्षा सहयोग योजना के अंतर्गत सहयोग प्रदान करने की घोषणा की, जिससे आयोजन की सार्थकता और अधिक बढ़ गई। भिक्षु भजन संध्या में श्रद्धानिष्ठ संगायक श्री कमल जी सेठिया ने अपनी भावपूर्ण एवं सुमधुर प्रस्तुति से वातावरण को भक्तिरस में सराबोर कर दिया। भिक्षु परंपरा से जुड़े अनेक भजनों की प्रस्तुति पर संपूर्ण सभा मंत्रमुग्ध हो गई और संध्या ने भक्तिमय समां बाँध दिया। कार्यक्रम में TPF की राष्ट्रीय टीम, स्थानीय तेरापंथ सभा-संस्थान के पदाधिकारी एवं सदस्यगण उपस्थित रहे। साथ ही बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं की सहभागिता ने कार्यक्रम को भव्य एवं सफल बनाया। कार्यक्रम का कुशल संचालन इस प्रकल्प के राष्ट्रीय प्रभारी प्रवीण जैन तथा देवेंद्र जी डागा द्वारा किया गया।

78वें स्थापना दिवस पर भव्य कार्यक्रम

हैदराबाद।

अणुव्रत समिति के 78वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में द्वितीय चरण का भव्य एवं प्रेरणादायी कार्यक्रम मोड़ा मार्केट स्थित टैगोर स्कूल परिसर में गरिमामय वातावरण में सम्पन्न हुआ। यह आयोजन अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी के तत्वावधान में स्थानीय अणुव्रत समिति, हैदराबाद द्वारा आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता अनिल कातरेला एवं अशोक मेडतवाल ने की। मंत्री रीटा सुराणा ने जानकारी देते हुए बताया कि कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र एवं अणुव्रत गीत के सुमधुर संगान से हुआ, आचार संहिता का प्रभावपूर्ण वाचन चंदन द्वारा किया गया। तत्पश्चात निशा चंदन एवं विद्यार्थियों ने लघु नाटिका एवं कविता पाठ के माध्यम से अणुव्रत के नैतिक मूल्यों को सजीव रूप में प्रस्तुत किया। एस. अंजली, खुशबू, कौशिक सामंता तथा दिगेश वैष्णव ने नशा मुक्ति विषय पर अपने ओजस्वी एवं जागरूकता से परिपूर्ण विचार रखे। अणुव्रत विषयक गीत का संगान कर उसके भावार्थ की संक्षिप्त व्याख्या की गई तथा विद्यार्थियों को अणुव्रत के सिद्धांतों का पालन करने हेतु संकल्प दिलाया गया। इस अवसर पर अणुव्रत रैली का आयोजन भी किया गया, जिसमें विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता निभाते हुए समाज में नैतिकता, संयम एवं नशा मुक्ति का संदेश जन-जन तक पहुँचाया। कार्यक्रम में टैगोर स्कूल की प्रिंसिपल गायत्री शंकर ने सभी अतिथियों का आत्मीय स्वागत किया तथा अणुव्रत समिति द्वारा किए जा रहे नैतिक एवं सामाजिक कार्यों की सराहना की। उन्होंने कहा कि समिति का विद्यालय को निरंतर विशेष सहयोग मिलता रहा है। विद्यालय की इंचार्ज बरमरम्भा, ललिता, सुनीता सहित अन्य प्राध्यापकगण की उपस्थिति ने कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाई।

बोलती किताब

एक शब्द एक चित्र

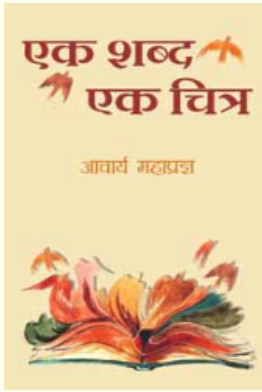

शब्द और अर्थ का आपसी सम्बन्ध अत्यंत गहन है। शब्द केवल ध्वनि या अक्षरों का समूह नहीं है, बल्कि वह अर्थ की वह वेदिका है, जिसमें ज्ञान और अनुभूति संचित होती है। शब्द एक प्रकार का शरीर है और अर्थ उसकी आत्मा होता है। कभी शब्द कटोरे के समान होता है, जिसमें अर्थ का दूध संचित रहता है; कभी म्यान की तरह, जिसमें तलवार रूपी अर्थ सुरक्षित रहता है। इसी प्रकार शब्द एक पेटी, मंजूषा या तिजोरी का रूप भी धारण करता है, जिसमें अर्थ का सामान या आभूषण सुरक्षित रहता है।

ज्ञान की प्राप्ति में शब्द का महत्व अत्यंत है। संसार के महान प्रवचनकार अपने शब्दों के माध्यम से दूसरों को प्रबुद्ध करते हैं। शब्द की उपेक्षा करके ज्ञान प्राप्ति की कोशिश करना अक्सर निरर्थक साबित हो सकता है। हालांकि शब्द जगत् महत्वपूर्ण है, परंतु उसके पार एक शब्दातीत, अशब्द संसार भी है, जिसकी अनुभूति उच्च साधक ही कर पाते हैं। अध्यात्मिक साधना में शब्द जगत् से अशब्द जगत् तक की यात्रा परमात्मा के अनुभव के लिए आवश्यक है।

परमपूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी शब्द जगत् के अद्भुत ज्ञाता थे। उन्हें अनेक भाषाओं का गहन ज्ञान प्राप्त था और वे शब्दों की दुनिया में रहते हुए भी अशब्द जगत् के अनुभव में निपुण थे। उनके प्रवचन और रचनाएँ शब्द और अर्थ के इस अनुपम संगम का जीवंत उदाहरण हैं। वे साधना और विवेक की उस ऊँचाई तक पहुँचे, जहाँ शब्द साधक को ज्ञान प्रदान करता है और अशब्द जगत् उसे परमात्मा के अनुभव से जोड़ता है।

प्रस्तुत पुस्तक 'एक शब्द : एक चित्र' संक्षेप में गहन विषयों पर प्रकाश डालती है। इसमें सार को संक्षेप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है, ताकि पाठक एक दृष्टि में संदेश ग्रहण कर सकें। गुरु के प्रति श्रद्धा और सम्मान व्यक्त करना कभी सूर्य को दीपक दिखाने के समान नहीं है, बल्कि यह उनके विचारों और शिक्षाओं के प्रति सम्मान प्रकट करने का माध्यम बन सकता है। मैं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के प्रति अपनी विनम्र श्रद्धा अर्पित करता हूँ और पाठक से अपेक्षा करता हूँ कि वे पुस्तक के सार को गहराई से समझें और अपने जीवन में उतारने का प्रयास करें।

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

पृष्ठ 1 का शेष

प्रकृति को महत्ता दे...

अतः इन तीनों की संगति करने से पूर्व यह चिंतन कर लेना चाहिए कि मनुष्य अच्छे प्रकृति के हों, क्षुद्रता के नहीं हो। साहित्य उच्च स्तर का हो और मीडिया में ऐसी चीजें देखने से बचना चाहिए जो अपने लायक नहीं हो। प्रवचन की समाप्ति के पश्चात् पूज्य प्रवर ने चारित्रात्माओं की जिज्ञासाओं को समाहित किया।

मनोरंजन को छोड़...

आगम में सुख को परिभाषित करते हुए कहा है कि कर्म निर्जीर्ण होने से जो मिलता है वह वास्तविक सुख है। मोक्ष में जो सुख है वह एकांत सुख है और विषय भोगों का सुख अनेकांत सुख है। मोहनीय कर्म के क्षीण होने के बाद जो सुख प्राप्त होता है वह अक्षय सुख है। अतः संसार में, गृहस्थ जीवन में बाह्य मनोरंजन भी हो सकता है परन्तु साधक अथवा गृहस्थ यह सोचे कि हमारा लक्ष्य आत्मिक सुख प्राप्त करने का होना चाहिए। यदि हमारा चिंतन प्रशस्त हो जाए तो हम मानसिक दुःख से मुक्त भी हो सकते हैं। यदि कोई समस्या जीवन में आ भी जाए तो दिमाग में अधिक तनाव नहीं रखना चाहिए। चिंता का भार न ढोकर समाधान का चिंतन करना चाहिए। अतः जो अनुकूलता-प्रतिकूलता आ जाए तो उसमें समता व संतोष रखना चाहिए। बाह्य सुखों में लिप्तता सुखों का कारण बन सकती है अतः व्यक्ति को मनोरंजन पर आत्मरंजन का अंकुश रखना चाहिए। आज चतुर्दशी के संदर्भ में परम पूज्य आचार्य प्रवर द्वारा चारित्रात्माओं को विभिन्न प्रेरणाएं प्रदान करते हुए हाजरी के क्रम को संपादित किया गया। समस्त चारित्रात्माओ ने लेख पत्र का उच्चारण किया। शासन माता साध्वीश्री कनकप्रभाजी की चतुर्थ पुण्य तिथि के संदर्भ में शासनमाता के संसार पक्षीय पौत्र और योगक्षेम वर्ष प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष प्रमोद बैद ने अपनी भावांजलि दी। नरपत दूगड़ ने भी अपनी अभिव्यक्ति दी। मुनिश्री श्रेयांश कुमारजी, मुनि कमलकुमारजी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। मुनिश्री दिनेशकुमारजी ने एक पद्य के माध्यम से शासनमाता की भाव स्मृति की।

आध्यात्मिक रंगों की होली का भव्य आयोजन

टॉलीगंज।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा द्वारा आयोजित ज्ञानशाला की अध्यात्मिक रंगो की होली का कार्यक्रम नमस्कार महामंत्र से प्रारंभ हुआ। ज्ञानशाला गीत की प्रस्तुति ज्ञानार्थीयों द्वारा प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में बृहद कोलकाता एवं दक्षिण बंगाल आंचलिक ज्ञानशाला सह-संयोजिका निधि कोचर, साउथ कोलकाता क्षेत्र संयोजक प्रकाश दुगड़, सह-संयोजिका जयश्री सुराणा एवं कार्यकारणी सदस्य नीतु बैद की उपस्थित में बच्चों द्वारा नवकार महामंत्र के रंगो की महत्व बताया ए वं निधि कोचर ने महामंत्र के पांच रंगो के छोटे-छोटे कार्डों द्वारा रंगो पर आधारित चीजों का संकल्प बच्चों के साथ-साथ उपस्थित सभा के सभी जनों को करवाया। मुख्य प्रशिकक्षिका सरोज पारख ने आध्यात्मिक रंगों की होली का महत्व बताया एवं प्रशिकक्षिकाओं द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुती दी गयी। सभा के संगठन मंत्री अजय आनन्द पुगलिया ने बच्चों को उपहार देकर सम्मानित किया। ज्ञानशाला संयोजक विनय सेठिया ने कार्यक्रम का संचालन किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
09 मार्च - 15 मार्च 2026

राग चेतना से वैराग्य चेतना की ओर बढ़ने का प्रयास रहे : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं।
26 फरवरी, 2026

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, तीर्थंकर महावीर के प्रतिनिधि, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी के मंगल महामंत्रोच्चार के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। साध्वी वृन्द ने प्रज्ञा गीत का संगान किया। तत्पश्चात् युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आर्हत् वाङ्मय के माध्यम से समुपस्थित श्रद्धालुओं को अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि जैन श्वेतांबर आम्नाय में बत्तीस आगम मान्य है। इनमें ग्यारह अंग, बारह उपांग, चार मूल, चार छेद और एक आवश्यक है। सभी आगम प्रमाण के रूप में सम्मत हैं। इनमें एक आगम है - उत्तरज्झयणाणि। इस आगम में तत्त्व ज्ञान भी उपलब्ध होता है और घटनाओं व कथानक के माध्यम से भी कुछ देने का प्रयास हुआ है। अध्यात्म की दृष्टि से साधक आत्मा को एक सुंदर दिशा-निर्देश प्राप्त हो सकता है। परिषहों को सहन करने का सुंदर शिक्षण हमें इस आगम के दूसरे अध्ययन से प्राप्त होता है। कई चारित्रात्माएं इस आगम को कंठस्थ करने का भी प्रयास करते हैं।

जिन शासन में ज्ञान का बहुत महत्त्व है। ज्ञान अध्यात्म विद्या का भी होता है तो लौकिक विद्या का भी हो सकता है। जो चारित्रात्माएं हैं, उनको किस प्रकार के ज्ञान को ग्रहण करने का अधिक प्रयास करना चाहिए, यह एक विवेच्य बात हो सकती है। एक ज्ञान वह होता है जिसे ग्रहण करने से आत्मोत्थान की प्रेरणा मिल सकती है, सुंदर आध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त हो सकती है। दूसरे ऐसे ग्रन्थ भी हैं, जिनका अध्यात्म से सीधा संबंध नहीं होता, अपितु जिनको ज्यादा पढ़ने से मन में अपवित्रता भी आ सकती है।

यद्यपि ज्ञान की जहां तक बात है, वह अपने आप में शुद्ध है। क्योंकि ज्ञेय तो नव ही तत्त्व हैं, परन्तु उनमें हेय भी हैं और उपादेय भी हैं। जो ग्रहण करने योग्य हो, जिस ज्ञान से आत्मा का कल्याण हो, उसी ज्ञान को जीवन में उतारने का प्रयास करना चाहिए। ज्ञान होने के बाद किस चीज को छोड़ना और किसे अपने जीवन का अंग बनाना, यह विवेक का विषय होता है। जिस ज्ञान से अध्यात्म की दिशा तय हो, जिससे मन में वैराग्य के भाव उत्पन्न हो जाएं, वैसे ज्ञान को ग्रहण करने का प्रयास करना चाहिए। वह ज्ञान हितावह भी हो सकता है। जिन शासन में वह ज्ञान है, वह आध्यात्मिक ज्ञान है जिससे राग से विराग की ओर गति हो जाए। व्यक्ति राग-चेतना से वैराग्य चेतना की ओर बढ़ जाए, भोग से योग की ओर गति हो जाए, मनोरंजन से आत्म रंजन की ओर प्रगति हो जाए, वैसे ज्ञान को ग्रहण करने का प्रयास करना चाहिए।

साधुओं को और विशेष रूप से छोटे साधुओं को अपने सुबह के समय का उपयोग आध्यात्मिक ज्ञान को सीखने में करने का प्रयास करना चाहिए। ज्ञान प्राप्त करने के बाद व्यक्ति को विनीत और अविनीत की पहचान भी अच्छे ढंग से हो जाती है। जो साधु आज्ञा, निर्देश का पालन करने वाले, आगम व गुरु की आज्ञा, निर्देश का पालन करने वाले होते हैं, वे विनीत होते हैं। मंगल प्रवचन के उपरान्त पूज्य प्रवर ने आज भी जिज्ञासा प्रदान करने का अवसर प्रदान किया। आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में आज शासन श्री साध्वी सरोजकुमारी (मुंबई) की स्मृति सभा हुई। आचार्य प्रवर ने उनके जीवन का संक्षिप्त परिचय प्रदान किया और उनकी आत्मा के प्रति आध्यात्मिक मंगलकामना की। आचार्य प्रवर के साथ चतुर्विध धर्म संघ ने चार लोगस्स का ध्यान किया। तदुपरांत मुख्य मुनिश्री महावीर कुमारजी, साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुत विभाजी, साध्वी वर्या श्री संबुद्धयशाजी ने उनकी आत्मा के प्रति आध्यात्मिक मंगल कामना की। उनकी सहवर्ती साध्वी चिराग प्रभाजी, गुजरात की साध्वियों व समणीवृंद ने समूह रूप में गीत की प्रस्तुति दी। शासन गौरव साध्वी कनकश्रीजी, साध्वी लब्धिश्रीजी, साध्वी रचनाश्रीजी व समणी कुसुम प्रज्ञाजी ने उनके प्रति अपनी भावांजलि दी। साध्वी श्री सरोज कुमारीजी की सहवर्तिनी साध्वी वृंद ने गीत का संगान किया। मुनि कमलकुमारजी ने भी भावांजलि दी। उनके संसार पक्षीय परिवार की ओर से भारती झवेरी, योगक्षेम वर्ष प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष प्रमोद बैद, तेरापंथ महिला मंडल-लाडनूं की अध्यक्षा शोभा ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

सर्व धर्म सद्भावना महामंगल मैत्री समारोह का हुआ आयोजन

चेम्बूर, मुंबई।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि अनंत कुमार जी एवं मुनि जैनमकुमार जी भिक्कू संघाज यूनाइटेड बुद्धिस्ट मिशन के पूज्य डॉक्टर भदंत राहुल बोधि जी के 75 में अमृत महोत्सव जन्मदिन के उपलक्ष में आयोजित सर्वधर्म सद्भावना समारोह में तेरापंथ धर्म संघ का प्रतिनिधित्व किया।

मुनि अनंत कुमार जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारतीय संस्कृति में मुख्यतः दो धाराएं है। वैदिक संस्कृति एवं श्रवण संस्कृति श्रमण संस्कृति के अंतर्गत बौद्ध एवं जैन धर्म का समागम होता है ।भगवान महावीर और महात्मा बुद्ध भी समकालीन थे। दोनों के जीवन सूत्र पढ़ते हैं तो समान से लगते हैं।

महात्मा बुद्ध कहते थे अप्प दीवो भवःऔर भगवान महावीर का उपदेश था अप्पणा सच्च में सेज्जा। मुनिश्री ने भदंत राहुल बोधि को इस समारोह के संबंध उनके साधना के प्रति अनुमोदन करते हुए कहा कि राहुल बोधि ने अपने गुरु के प्रति समर्पण किया।

उन्होंने अपने जीवन में 8000 से अधिक प्रवचन किए हैं। अनेक देशों में मानवता का मिशन लेकर घूमे हैं। 1996 में कनाडा में भी महात्मा बुद्ध के अवशेष लेने के जाने वाली टीम में आपको बौद्ध धर्म की ओर से भेजा था।

मुनिश्री ने कहा कि मुझे याद है कि इस कार्यक्रम में क्रिश्चियन धर्म की ओर से फादर माइकल रोझारीयो,हिंदू धर्म की ओर से स्वामी सद्गुरु मंगेश दा, ब्रह्माकुमारी सखु दीदी, ब्रह्मा कुमारी प्रतिभा बहन ,स्वामी गुरुनाथ बालाजी ,स्वामी गोविंद गिरी महाराज एवं बौद्ध संप्रदाय से अरुणाचल से अनिरुद्धा, तेरापंथ समाज की ओर से ख्यालीलाल तातेड ,नरेंद्र तातेड, जीतू भाई भाभेरा, राजकुमार चपलोत, ताराचंद गन्ना , लक्ष्मण कोठारी, ललित लोढ़ा आदि भी उपस्थित थे। महाराष्ट्र सरकार के केबिनेट मंत्री मंगल प्रभात लोढा की विशेष उपस्थिति थीं।इस कार्यक्रम की रूपरेखा में मुख्यतः भूमिका राजकुमार चपलोत की रही है।

अणुव्रत स्थापना दिवस समारोह का आयोजन

गुवाहाटी।

अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी के तत्वावधान में अणुव्रत समिति, गुवाहाटी द्वारा स्थानीय तेरापंथ धर्मस्थल में अणुव्रत स्थापना दिवस एवं अणुव्रत काव्यधारा का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम के प्रथम चरण में अणुव्रत झंडारोहण के साथ अणुव्रत गीत का संगान हुआ।

कार्यक्रम के द्वितीय चरण का शुभारंभ अणुव्रत आचार संहिता के वाचन से हुआ। समिति के अध्यक्ष संजय चौरड़िया ने अपने संबोधन में सभी का स्वागत - अभिनंदन करते हुए अणुव्रत दर्शन के विषय में विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि 1 मार्च 1949 को सरदारशहर (राजस्थान) की धरती से युगद्रष्टा आचार्य श्री तुलसी ने एक महान आंदोलन का शंखनाद किया, जिसे हम 'अणुव्रत आंदोलन' के नाम से जानते हैं। समिति के परामर्शक कैलाश काबरा ने कहा कि अणुव्रत समिति से जुड़ने के पश्चात मेरे में काफी परिवर्तन आया है। मुख्य अतिथि प्रतिष्ठित उद्योगपति, समाजसेवी एवं राजस्थान फाउंडेशन, असम के अध्यक्ष रतन शर्मा का परिचय स्मिता सुराणा ने दिया। उनका मोमेंटो, डायरी आदि से सम्मान किया गया। रतन शर्मा ने कहा कि आज का दिन संयम और चरित्र की भावना सिखाता है।

उन्होंने अणुव्रत समिति को अपनी संस्था के साथ मिलकर वृहद कार्यक्रम कार्य करने हेतु आमंत्रित किया। इस अवसर पर अणुव्रत लेखक मंच के संयोजक सीए रतन अगरवाला की पुस्तक 'आत्मकथा - मेरी और आपकी' का उपस्थित अतिथियों द्वारा विमोचन किया गया।

आचार्य भिक्षु : जीवन दर्शन

विभज्यवाद-2

किसी ने पूछा– 'मैंने भूखे आदमी को रोटी खिलाई, प्यासे को पानी पिलाया, मुझे धर्म हुआ या नहीं?'

आचार्य भिक्षु ने कहा– 'मैं धर्म को दो दृष्टियों से देखता हूं। एक लौकिक धर्म, जो लोक सम्मत है। दूसरा लोकोत्तर धर्म, जो अध्यात्म सम्मत है। तुम किस धर्म की अपेक्षा से पूछ रहे हो?

'यदि लौकिक धर्म की अपेक्षा से पूछ रहे हो तो मैं कहूंगा कि सभी लोकोपयोगी कार्य यदि लोक सम्मत हैं तो उन्हें लौकिक धर्म कहा जा सकता है।'

'यदि तुम लोकोत्तर धर्म की अपेक्षा से पूछना चाहते हो तो मैं कहूंगा कि वे प्रवृत्तियां अध्यात्म सम्मत नहीं हैं, इसलिए उन्हें लोकोत्तर धर्म नहीं कहा जा सकता।'

क्या आप जानते हैं?

लवंग, चीनी आदि से पानी का वर्ण, गन्ध, रस आदि परिवर्तित हो जाएं तो उसे अचित्त माना जाए। परन्तु उसे तपस्या में न पीएं।

जानें तेरापंथ को-पहचाने स्वयं को

जैन जीवन शैली-2

अहिंसा

1. अहिंसा केवल न मारना ही नहीं बल्कि प्राणी मात्र के प्रति संवेदना रखना होता है।
2. पर्यावरण के प्रति जागरूकता।
3. प्राणीमात्र के प्रति मैत्री-करूणा- सहृदयता की भावना।

श्रमण संस्कृति

1. मानवीय एकता में विश्वास करना।
2. जाति-धर्म के आधार पर एकता का विकास।
3. शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व।
4. पारस्परिक व्यवहार में संतुलन।
5. स्वावलम्बन का विकास।

साधार्मिक वात्सल्य

1. जन-जन में अहिंसा के प्रति आकर्षण।
2. जातीय सद्भाव।
3. साम्प्रदायिक सद्भाव।

संदर्भ पुस्तकें : आचार्य भिक्षु जीवन दर्शन, भिक्खु दृष्टांत, श्रावक संदेशिका

भिक्षु की कहानी
जयाचार्य की जुबानी

दुरंगे क्यों रंगते हो?

कोई कहता है– पात्रों को दो रंग में (लाल और काला) क्यों रंगते हैं?

तब स्वामीजी बोले– उनमें कुंथुओं (सूक्ष्म जीवों) का अच्छी तरह से पता लग जाता है। वे एक रंग से दूसरे रंग पर आते हैं तब सरलता से दिख जाते हैं। कोरा हिंगुल बोझिल भी होता है। काला रंग हल्का होता है। उस पर से चिकनाहट उतारना आसान होता है। इत्यादि अनेक कारणों से पात्रों को कई रंगों से रंगा जाता है। सूत्र में अनेक रंगों से रंगने का निषेध नहीं है।

साप्ताहिक प्रेरणा

21 द्रव्यों से अधिक लेने का त्याग करें

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
09 मार्च - 15 मार्च 2026

धर्म का मूल है विनय : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं।
27 फरवरी, 2026

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के मंगल महामंत्रोच्चार के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। इसके पश्चात् साध्वी वृंद ने प्रज्ञागीत का संगान किया।

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आज के निर्धारित विषय 'क्यों करें विनय'? क्यों कि प्रत्येक कार्य करने के पीछे एक प्रयोजन होता है। यदि विनय के बारे में बात करें तो विनय, अहंकार पर चोट पहुंचाने का एक उपाय है। विनय का विरोधी तत्त्व अहंकार है। अतः विनय, मान कषाय को नष्ट करने, कृष करने का एक उपाय है। अहंकार का अभाव और साथ में नम्रता का प्रयोग विनय है।

कहा गया है कि निर्बाध और अखण्ड सुख पाना है तो मोक्ष को पाना आवश्यक है। चारित्र के पालन से मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। दर्शन और श्रद्धा अच्छी होने पर चारित्र का पालन हो सकेगा। दर्शन की प्राप्ति ज्ञान प्राप्त करने से हो सकती है और ज्ञान विनय से प्राप्त होता है। अतः विनय से ज्ञान, ज्ञान से दर्शन, दर्शन से चारित्र और चारित्र से मोक्ष की प्राप्ति की जा सकती है। मोक्ष मिल जाने पर निरबाध सुख की प्राप्ति हो सकेगी। अतः विनय को शाश्वत सुख की आधारशिला के रूप में देखा जा सकता है। धर्म का मूल विनय को बताया गया है। अहंकार

शून्यता और साथ में विनम्रता आ जाए तो यह विनय होता है।

संस्कृत के एक श्लोक में कहा गया कि जो अभिवादनशील है, हमेशा वृद्धों की सेवा करने वाला और निकट रहने वाला व्यक्ति है, उसके चार बातों का विकास होता है - आयुष्य लंबा होता है, विद्या बढ़ती है, यश फैलता है और शक्ति बढ़ती है। विनय नम्रता का प्रयोग है और अभिवादन करने से भी नम्रता झलकती है। मार्ग में बड़े संत मिले, कोई बड़ा मिले तो उसे यथा विधि वंदन अथवा अभिवादन करके उनके प्रति विनय का भाव अभिव्यक्त करने का प्रयास करना चाहिए।

व्यक्ति का व्यवहार प्रामाणिक होना चाहिए। सही बात बताने में कोई संकोच अथवा भय नहीं रखना चाहिए। दंड अथवा उलाहने से बचने के लिए प्रामाणिकता में कमी आ जाना अच्छी बात नहीं होती है। अनाचार का भी सेवन यदि हो जाए तो उसे छिपाना नहीं चाहिए। प्रामाणिकता का पथ सीधा सपाट होता है। अपनी भूल को छिपाने से तनाव पैदा हो सकता है। चारित्रात्माओं को प्रामाणिकता के प्रति विशेष जागरूक रहना चाहिए, यह हमारी आत्मा के लिए हितकर है। चारित्रात्माओं से कोई छोटी-मोटी गलती हो जाए तो उनकी प्रायश्चित और आलोयणा की वृत्ति रहनी चाहिए। आलोयणा लेने से हमारी सफाई होती रहती है। प्रतिक्रमण को भी शुद्ध रखने का प्रयास करना चाहिए। गलती का प्रायश्चित ले लेने से चारित्र निर्मल रह सकता है। विनय की भावना हो तो शील की प्राप्ति हो सकती है।

मंगल प्रवचन के उपरान्त पूज्य प्रवर ने चारित्रात्माओं को जिज्ञासा रखने का अवसर प्रदान किया तो चारित्रात्माओं ने अपनी जिज्ञासाएं प्रस्तुत की और पूज्य प्रवर ने उनका समाधान प्रदान किया। तदुपरांत आचार्य प्रवर जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा द्वारा नवनिर्मित भवन 'अभ्युदय' एवं उसके अन्तर्गत बने उपासक साधना केन्द्र में पधारे। आचार्यश्री से मंगल पाठ का श्रवण कर भवन के निर्माण कर्त्ता व अनुदान दाता जयंतीलाल सुराणा, विजय, सुयश सुराणा परिवार ने भवन का लोकार्पण किया। सुरेशचंद गोयल मुख्य न्यासी ने भवन के संदर्भ में अवगति दी। जयंतीलाल सुराणा व उपासक श्रेणी के राष्ट्रीय संयोजक सूर्यप्रकाश श्यामसुखा ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

इस संदर्भ में आचार्य प्रवर ने उपासक-उपासिकाओं को मंगल आशीर्वाद प्रदान किया और उपासक-उपासिकाओं को विधिवत प्रशिक्षण प्रदान करते हुए उपासक साधना केन्द्र का प्रायोगिक शुभारंभ भी किया।

अर्हम्

'शासनश्री' साध्वी विद्यावतीजी 'प्रथम' का देवलोकगमन

जीवन परिचय

जन्म :	वि. सं. 1993, जेठ शुक्ला दशमी, गौरीपुर (आसाम)
माता :	स्व. मुनीदेवी
पिता :	हनुतमल दुग्गड़
दीक्षा :	वि. सं. 2004, पौष कृष्णा पंचमी भादरा में आचार्य श्री तुलसी के करकमलों से
अग्रणी साध्वी :	साध्वी श्री केशरजी (सरदारशहर के साथ लगभग 44 साल तक तन की पछेवड़ी बनकर रहे।)
अग्रणी :	ई.स. 2000, आचार्य श्री महाप्रज्ञजी द्वारा
शासनश्री अलंकरण :	आचार्य श्री महाश्रमणजी द्वारा
यात्रा :	मेवाड, मारवाड़, गुजरात, महाराष्ट्र, खानदेश, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, मध्यप्रदेश आदि।
कला :	सिलाई, रंगाई, लोच आदि में दक्षता
कण्ठस्थ ज्ञान :	दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, आचारांग, बृहकल्प, नन्दी, आगम बत्तीसी का स्वाध्याय अन्य हजारों गाथाएं कण्ठस्थ।
परिवार से दीक्षित :	शासनश्री साध्वी सुप्रभाजी (मासीजी महाराज), साध्वी सूर्ययशाजी (भतीजी)
स्वर्गवास :	3 मार्च 2026, मंगलवार प्रातः लगभग 5 बजकर 17 मिनट पर।

आचार्यश्री महाश्रमणजी : चित्रमय झलकियां

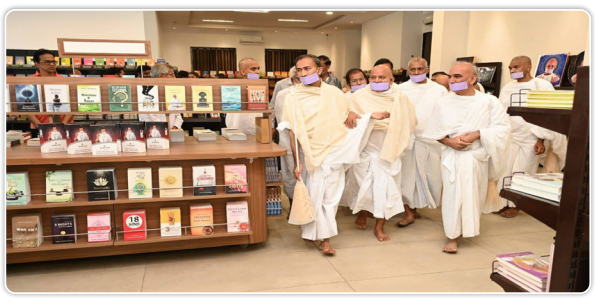

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - पंकज कुमार डागा द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। अध्यक्ष : पवन मांडोत